पृथ्वी पर हम सब समय माया के यात्री हैं

साप्ताहिक

समय माया

R.N.I. No.: MP/HIN/2006/20685

प्रधान संपादक- अजमेरा एस.पी. कुमार
B.COM., M.A., LLB, CAIIB, DLLLW&PM

Webite: www.samaymaya.com
Email: samaymaya@gmail.com
samaymaya@rediff.com

Cell: +91 9425125569
+91 9479535569

(C) All Copyrights reserved with chief editor, do not publish any matter without prior written permission

In case of any dispute, may be solved only in Indore Court Jurisdiction

वर्ष 17 | अंक 42 | प्रति सोमवार इंदौर, 20 से 26 मई 2024 | पृष्ठ 8 | मूल्य 5/- रुपए

धरती पर युद्ध कहीं भी हो फायदा अमेरिका को

रूस को बर्बाद करने यूक्रेन को सतत् हथियार आपूर्ति

विश्व में हर प्रकार की बर्बादी के लिए अमेरिकी कपटी संगठन, बहुराष्ट्रीय कंपनियां जिम्मेदार

विश्व भर में पिछली एक शताब्दी से पृथ्वी पर मानव सभ्यता के साथ पृथ्वी पर जल, वायु पशु पक्षियों फसलों वनों व भूमि की बर्बादी में अमेरिका की पूरे विश्व के विभिन्न काले, गोरे, गेहूंआ

मानवों की वर्णसंकर नस्ल जिम्मेदार है। प्रथम विश्व युद्ध के बाद बनाए विभिन्न संगठनों जिसमें संयुक्त राष्ट्र शैतान संघ UNO उसके अनुषांगिक संगठनों विश्व घातक व्यापार संगठन UTO, विश्व घातक स्वास्थ्य संगठन WHO का धरती पर पिछली एक शताब्दी का उनकी भूमिका का खेल देख ही लिया है। इन सब संगठनों को वहां की बहुराष्ट्रीय दवा हथियार व अन्य सामग्री बनाने वाली कंपनियां इन संगठनों को धन देकर अपने व्यवसाय को विकसित करने वहां की सरकारों को खरीद कर पैर जमाने कानून बनवाने और उसकी आड़ में अपना माल दवाई टीका हथियार बेचने का षड्यंत्र तो करती ही रही हैं। वर्तमान में भी अपने घातक टीके के परिणामों से युवाओं की हो रही मौत का तांडव देख ही रहे हैं। वर्तमान में लंबे समय से चल रहे रूस यूक्रेन व इजराइल गाजा युद्ध में भी अमेरिका लगातार इस युद्ध की आग में यूक्रेन को अपने समय बाधित पुराने हथियार मिसाइल जहाज ड्रोन टैंक गोला बारूद बंदूकें आदि देकर एक तरफ

यूक्रेन को नष्ट करने पर आमद है तो दूसरी तरफ प्रतिद्वंदी रूस को कमजोर कर अर्थव्यवस्था चौपट कर नष्ट करने का षड्यंत्र कर रहा है। बेशक युद्ध मानव सभ्यता के लिए से परिणाम घातक होने के साथ-साथ पृथ्वी की जलवायु को भी बर्बाद करते हैं पर इससे इन हरामखोरों को कोई फर्क नहीं पड़ता। उल्टे ही अमेरिकी हथियार निर्माता कंपनियां उनके प्रवर्तक संचालक अध्यक्ष सब बड़े ही खुश होते हैं। कंपनी के अंश धारियों को लाभांश का सुखद संदेश देते हैं। समाचार रिपोर्टों से पता चलता है कि विश्व स्तर पर सबसे उन्नत हथियार निर्माताओं में से एक, रेथियॉन और लॉकहीड मार्टिन, अपने निवेशकों को खुले तौर पर बता रहे थे कि यूक्रेन संघर्ष व्यापार के लिए अच्छा था। जैसा कि पुरानी कहावत है, युद्ध हमेशा व्यापार के लिए अच्छा होता है। और जैसे ही दुनिया दो साल तक चली भयावह कोविड-19 कोरोना वायरस महामारी से उभर रही है, जिसमें सभी अर्थव्यवस्थाओं में तेजी से गिरावट आई है, पिछले हफ्ते यूक्रेन पर रूस के आक्रमण ने अमेरिका, यूरोपीय और दुनिया भर के अन्य हथियार निर्माताओं के लिए एक बहुत आकर्षक जीवनरेखा फेंक दी है। जैसे ही दुनिया 21वीं सदी के शीत युद्ध के दौर में लौट रही है, भले ही और भी अधिक उन्नत परमाणु हथियारों के साथ, अमेरिका और नाटो देशों ने रूस की सीमाओं पर तैनाती के लिए अपनी सेनाओं को नवीनीकृत करना और अपनी व्यक्तिगत परिचालन क्षमताओं को बढ़ाना शुरू कर दिया है। एक ऐतिहासिक पहल में, यूरोपीय संघ (ईयू) ने भी एक उचित कारण के लिए हथियार खरीदने और उन्हें यूक्रेन में स्थानांतरित करने का वादा किया है, जिससे वैश्विक सामग्री की बिक्री में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

(शेष पेज 6 पर)

क्या मोदी और शाह मणिपुर को पूरी तरह बर्बाद करके ही मानेंगे

म्यांमार आतंकियों ने मणिपुर में 997 गांव बसा रहवासियों का किया जीना दूभर

आतंकियों का स्वागत और रहवासियों का खात्मा क्या मोदी की पूंजीपतियों को जमीन सौंपने के षड़यंत्रों की सोची समझी रणनीति

मणिपुर में बेटे युवकों की जनजातियों के बीच में लगातार संघर्ष जारी है। सत्ता, प्रशासन और पुलिस मूक दर्शक बनकर आगजनी बलात्कार मार काट हिंसा की आग में घी झोंक मक्कारी से मुस्कुराते हुए ताप रहे हैं। दूसरी तरफ भारत की म्यांमार से 1643 किलोमीटर लंबी सीमा पर लगातार म्यांमार के आंतरिक गृह युद्ध के कारण वहां से लगातार हो रहे पलायन में म्यांमार के रोहिंग्याओं ने मणिपुर में लगभग 996 गांव बसा कर अपनी बस्ती बसाना शुरू कर दिया है। वहां के भाजपाई मुख्यमंत्री बीरेंद्र सिंह जो 2-3 साल से भारत सरकार को लगातार सारे जातिगत और म्यांमारी घुसपैठियों के उपद्रवों के बारे में लगातार सूचित कर रहे हैं पर सीमाओं पर चाहे पाकिस्तान कि गुजरात कच्छ से लेकर कारगिल लद्दाख तक की 1600 किलोमीटर लंबी सीमा पर और सिक्किम लद्दाख से लेकर म्यांमार तक चीन से लगती 4600 किलोमीटर लंबी सीमा के साथ 1600 किलोमीटर लंबी सीमा पर नियंत्रण देखरेख और मजबूत भारतीय सेना की उपस्थिति दिखाने पाकिस्तान चीन और म्यांमार के आतंकीया सेना व उपद्रवियों की घुसपैठ को रोकने में पूर्णतः नाकामयाब असफल अक्षम होने के बाद भी खुले में मंचों से सच्चाइयों को छुपाने घोषणा करते रहे ना कोई देश की सीमा में घुसा है ना किसी ने अतिक्रमण किया है। कहकर सीमाओं पर मजबूत नियंत्रण करने की अपनी नाकामी को छुपाने के साथ घुसपैठियों को चारों तरफ से देश की सीमाओं में घुसकर गांव बसाने कॉलोनी काटने सड़के रेलवे लाइन बिछाने की खुली छूट दे रखी है।

बस समाचार पत्रों में सीमा पर हम यह कर रहे हैं सीमा पर हम वह कर रहे हैं यथार्थ में देश की सुरक्षा के नाम पर एक तरफ देश की 40 लाख की सेना को घटाकर 10 लाख करना। युद्ध होने पर आवश्यक गोला बारूद की आवश्यकता को 40 दिन से घटाकर 30, 25, 20, 15 और 10 दिन करना।

(शेष पेज 7 पर)

आईसीएमआर, आइएमए दोनों विश्व घातक संगठन के फ्रेंचाइजी

देश के 10 करोड़ व्यापारियों उद्योगों को नष्ट करने का षड्यंत्र

ESTD 1928
INDIAN MEDICAL ASSOCIATION

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH
NEW DELHI
नई दिल्ली

icmr
INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH
Serving the nation since 1911

अमेरिकी वर्णसंकर प्रजाति के विश्व घातक संगठन जो अपने आप को विश्व स्वास्थ्य संगठन बताता और पूरे विश्व में अमेरिकी कंपनियों की दवाइयां टीके इंजेक्शन खाद्य पदार्थ बेचने के लिए दूसरे सभी देशों के सहस्त्रों वर्षों से प्रचलित उपयोग किया जा रहे मसाले अनाजों दलहन तिलहन फल फ्रूट सब्जियों खाद्य व पेय पदार्थों को स्वास्थ्य के लिए घातक बता कर रोकने प्रतिबंधित करने का षड्यंत्र करता है। यह हरामखोर जल साधु का संगठन सबसे पहले यह बताएंकी क्या उसने विश्व में प्रचलित भारत की सबसे प्राचीन लाखों वर्ष पुरानी चिकित्सा विज्ञान के आयुर्वेद जिसकी अनेकों शाखाएं हैं। जिसमें भारत के सनातन धर्म के मंत्रों से चिकित्सा से लेकर बृहत वनस्पतियों, जड़ी बूटियों मसालों फल फूल सब्जियों की औषधियों मौसम के अनुकूल भोजन की चिकित्सा से लेकर कुंडली के आधार पर ग्रहों की व्याख्या कर रत्नों से भी चिकित्सा करता आ रहा है।

विश्व घातक संगठन के षड्यंत्रों को फेल कर रहे भारतीय मसाले

यूरोप में यही आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति व मुस्लिम देशों में यूनानी चिकित्सा पद्धति के नाम से जाती है, जर्मनी की 600 साल-पुरानी सबसे सरल और सस्ती होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति को पढ़ा समझा। उसके गुण दोषों का अध्ययन किया नहीं। हरामखोर एकों जालसाजों षड़यंत्र कारियों की फौज जिस एलोपैथी की बात करती है। उसका जन्म हुए मात्र 100 साल ही हुए हैं। और हर एलोपैथिक औषधि का स्वयं सारे एलोपैथिक डॉक्टर मानते हैं कि उसके साइड इफेक्ट होते हैं। फिर एक सरकारी विभाग में काम करने वाले डॉक्टर सेमेरी लंबी चर्चा हुईतो उसने एक बहुत ही आश्चर्यजनक तथ्य बताया। की एक बार किसी पत्रकार ने एक डॉक्टर से पूछाकि आपकी एलोपैथि क्या विज्ञान है या कला। तो डॉक्टर ने जवाब दियाकि यह कला भी है और विज्ञान भी। यह कला के रूप मेमानव जीवन को बीमारियों से सुरक्षित करने की कला हैतो दूसरी तरफ विज्ञान के रूप में यह संभावनाओं का विज्ञान है

(शेष पेज 2 पर)

संपादकीय

आधार व उपलब्धिहीन मुद्दों व करोड़ों की मौत के बाद भी फिर चाहिये सत्ता

इंडिया गठबंधन क्यों चुनाव को मूल मुद्दों पर टिका रहा है और क्यों भाजपा मुसलमान व राम मन्दिर के नाम पर भटका रही है। इस बार का चुनाव दिलचस्प तो है मगर इसे विषैला बनाते विघटन पर भी खींचा जा रहा है. क्योंकि भाजपा इसे मुस्लिम लीग, जिन्ना, मुस्लिम आरक्षण व हिन्दू मुस्लिम उन्माद पर दांव दौड़ा रही है वहीं इसके मुक़ाबले कांग्रेस द्वारा जनमानस हेतु पाँच न्याय व पच्चीस गारंटियों का फ़लसफ़ा ज़्यादा मज़बूत हुआ देख भाजपा ने मंगलसूत्र, संपत्तियों व जायदाद छीने जाने का भय बताया तो शोषितों का संवैधानिक आरक्षण व चालीस करोड़ अल्पसंख्यक धर्मियों के संवैधानिक सुरक्षा के संरक्षण को ख़त्म करने के लिए संविधान को ख़त्म करने के इंडिया गठबंधन के आरोपों को जब ज़बरदस्त समर्थन मिलता दिखा तो भाजपा की ओर से देश का ध्यान बांटने के लिए अब मोदीज़ी कह रहें कि इंडिया गठबंधन जीता तो वे कभी कहते हैं कि राम मंदिर पर ताला लग जाएगा व कभी कहते है कि राम मंदिर पर बुलडोज़र चलवा दिया जाएगा.और अब योगी तो दो कदम आगे बढ़कर कह रहे हैं कि यह चुनाव तो रामभक्तों रामद्रोहियों के बीच है.वहीं इंडिया गठबंधन तो इसे विनाश थोपकर देश को तबाह बनाने वाले मोदी के एनडीए गठबंधन और विकास व समृद्धि के पक्षधर इंडिया गठबंधन के बीच का चुनावी संघर्ष बता रहे हैं और कह रहें कि करोड़ों करोड़ के चंदा उगाई के धंधाखोर बन प्रजा को मौत देने वाले असुरों की संरक्षक भाजपा के मुक़ाबले प्रजा के महान हितों का संरक्षण करने वाले इंडिया गठबंधन के बीच का घमासान बता रहे हैं.

इण्डिया गठबंधन भीषण मंहगाई, कमरतोड़ मूल्यवृद्धि, भयावह बेरोज़गारी, गरीबी, भूखमरी कुपोषण, आर्थिक उत्पीड़न,सरकारी टैक्सों का भयावह बढ़ता व कुचलता जाल, शिक्षा, स्वास्थ्य व बुनियादी ज़रूरतों में पिछड़ते हालात निर्यात, उत्पादन क्रय शक्ति,माँग शक्ति,बचत शक्ति, मुद्रा स्फीति,भारतीय मुद्रा का सदी का सबसे बड़ा अवमूल्यन,दो सौ अरब पार घाटा और सत्तर वर्षों के मुक़ाबले तीन गुणा से अधिक विदेशी क़र्ज़ लाकर सैकड़ों पीढ़ियों को क़र्ज़दार बनाने के साथ सरहदों पर कब्ज़े के बावजूद मोदी सरकार के घुटने टेक देने की असफलता को इस चुनाव के मुद्दे बना भाजपा को घेर रही है वहीं भाजपा अपने द्वारा किए काम, विकास, योगदानों को लेकर एक शब्द न बोलकर सिर्फ़ चुनाव को मुसलमान से लेकर मन्दिर तक ही सीमित किए हुए चुनाव को मुद्दाविहीन बना रही है क्योंकि चुनाव बहुत ज़्यादा फँस गया है.एक बात है कि भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व भाजपा की ओर से चार राज्यों के राज्यपाल रहे सत्यपाल मलिक तो कहते हैं कि भाजपा को लगेगा कि चुनाव हार रही तो वो श्रीराम मन्दिर पर हमला भी करा सकती है और वो किसी भी हद तक जा सकती है. या फिर चुनाव आयोग की मिलीभगती से चुनाव जीतने के ही परिणाम आते हैं.यही सब कौतूहल इस चुनाव को लेकर चल रहा है.

एंटी इवेजन को धारा 68 व 71 के अधिकार क्यों नहीं

सीजीएसटी निरंतर छापे व जांच की करता है कार्यवाही

प्रदेश के सभी 40 से ज्यादा नाकों को खोल प्रवेश पर मालवाहकों की हो जांच

देश में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के इशारे व मोटे फायदे के लिए व छोटे व्यापारियों उद्योगों को उलझा कर खत्म करने जब माल एवं सेवा कर बिना पूरी तैयारी किये थोपा गया। तब बड़ी-बड़ी घोषणायें स्वंय मोदी ने महीनो तक अपनी बहादुरी दिखाने महान बनने चेहरा चमकाने टीवी पर की गई थी। एक देश एक कर।

एक बार भर फिर माल सेवाओं पर कहीं कोई कर नही लगेगा। जब एक बार माल किसी उद्योगपति उत्पादक ने बेच दिया। तो फिर व्यापारियों छोटे विक्रेताओं को परेशान क्यों किया जाता है? क्यों उससे अनेकों प्रकार की आपवादिक विवरणियां मांगी व जमा करवा पूरी विक्रय श्रृंखला को विवर्णियां समय पर जमा ना करने विलंब होने पर ब्याज दंड आदि में उलझाया व वसूली की जाती हैं?

वैसे भी 1 जुलाई 2017 को जीएसटी ठोकने के बाद 2440 दिन गुजर जाने के बाद भी लगातार 7000 से ज्यादा संशोधन कर छोटे व्यापारियों उद्योगों को उलझाने खत्म करने कर भुगतान में चूक या गलती होने पर गिरफ्तारी की व्यवस्था कर समाज में बदनाम कर आर्थिक सामाजिक को चौपट करने के लिए कर दिए गए।

दूसरी तरफ मोदी ने अपने खास मित्रो अडानी अंबानी टाटा बिरला को आपवादिक रूप से अनेकों धाराओं में छूट देकर कई गुना लाभ कमाने का अवसर दे प्रतियोगी बाजार में उनके प्रतिद्वंदी उत्पादक विक्रेताओं को खत्म करने का षड्यंत्र किया जा रहा है। 1 जुलाई 2017 को जीएसटी ठोकने के बाद कुछ महीनों तक सभी प्रकार के सामानों की कीमतें कम हुई? परंतु मोदी आका ने उन सभी बड़ी वस्तुओं के उत्पादको वस्त्रो वाहनो से लेकर भारी मशीनरी से लेकर इलेक्ट्रिकल इलेक्ट्रॉनिक गुड्सव अन्य सभी प्रकार के उत्पादको सैकड़ोंहजारो करोड़ो में वसूली कलसारी कीमतों को जरूर बना कर सरकार सारे टैक्स कि दरों को बढ़वाकर कई गुना कमाई की गई। जो कांग्रेस सरकार मेंवो ढाई सौ वस्तुओं पर वेट लगाया जाता था मोदी ने धीरे-धीरे करते-करते 1500 से ज्यादा वस्तुओं और सेवाओं परठोकर लाखो करोड़ऑन के जीएसटी का लाभ कमाया अवश्य परंतु राज्यो को उनका कर का हिस्सा नही चुकाकर परेशान करने का षड्यंत्र किया। जैसा की मैं सन 2006 से लगातार इस जीएसटी के षड्यंत्र के बारे में लिख रहा था। वॉइस सर्च वैसा का वैसा ही 7 साल में पूरी तरह से सामने आ चुका है।

हालत यह है कि जिस जीएसटी कांउसिल ने बहुराष्ट्रीय कंपनियों और अपने पूंजी मित्रो अडानी अंबानी टाटा बिरला आदि के किराए के लेखाकारों या चार्टर्ड बनाम करप्ट अकाउंटेंट के गिरोहों की सलाह से यह कर प्रणाली तैयार कर बनाई थीवह आज तक ना तो जीएसटी कांउसिल के सदस्यों को ढंग से समझ मे आई ना ही केंद्रीय कस्टम सीजीएसटी के आयुक्त से लेकर संयुक्त, उप, सहायक आयुक्तो अधिकारियों निरीक्षको तक को समझ नही आई चर्चा करने परबताते हैं। जब तक हम किसी तथ्य को समझने की कोशिश करते हैं तब तक नया संशोधन आ जाता है। यही हाल देश के लगभग 10 करोड़ से ज्यादा करदाताओं का है। वे बताते हैं कि हम हर नये संशोधन के हिसाब से कर भुगतान कर जब तक विवरणी जमा करते या करने जाते हैं। तब तक उलझाने वाला नया संशोधन प्रकट हो जाता है और हमको उसमें उलझा कर ब्याज और दंड की व्यवस्था पूरी करनी पड़ती है। तो आखिर जाहिल डकैत लुटेरों की सरकार कब तक अपने ही देश के गणमान्य व्यापारियों उद्योगों जो करोड़ो लोगों का पेट भरते हैं रोजगार देते हैं। अर्थव्यवस्था चलाते हैंको बहुराष्ट्रीय कंपनियों के मोटे फायदे के लिए परेशान प्रताड़ित किया जाता रहेगा। और किसी प्रकार की चूक होने पाए जाने पर इस गिरफ्तारी तक की व्यवस्था है जिसे तत्काल बदला जाना चाहिए। आखिर वे गुड़ मॉर्निंग नागरिक है देश की सरकारो को कर चुके हैं सरकार चलाते हैं और उसके बाद में भी छल कपट से प्रस्तावित करके आखिर गिरफ्तार क्या किए जाते हैं। जब 7 साल गुजर चुके हैं कब तक संशोधन होते रहेंगे?

दूसरी तरफ जब माल की बिक्री के समय उस के बिलो में स्पष्ट राज्य व केंद्र सरकार के अलग-अलग कर की व्याख्या होती है। तो सीधे ही राज्य सरकारों की वित्तीय व्यवस्था को मजबूत बनाए रखने राज्यो के खातो में अंतरित क्यो नहीं किया जाता?

राज्यों के कर विभागो मे वर्षों से भर्ती न होने के कारण स्टाफ की भारी कमी है जिसे शीघ्र दूर किया जाना चाहिए।

वर्तमान में पूरे वाणिज्य कर विभाग में बिना परीक्षा और विभागीय पदोन्नति समिति की बैठकों के निर्णय के बिना ही मोटा प्रभार लेकर विभाग में उच्च पदो पर बैठने का चलन हर विभाग की तरह यहां भी पिछले कई सालो से अनवरत चल रहा है। जिसमें अधिकांश घोर भ्रष्ट जालसाज भी भी बड़े पदों पर बैठा दिए हैं। प्रदेश में 6 एंटी एवेजन ब्यूरो की की शाखाएं पूर्व से कार्यरत होने के उपरांत भी इन्हे बहुराष्ट्रीय कंपनियों से सीधा महीना मिलने के कारण क्योंकि वर्तमान में हालात यह है कि गांव की किराना दुकानों से लेकर शहरों के बड़े-बड़े शॉपिंग मॉल तक बहुराष्ट्रीय कंपनियों का घातक कीटनाशक व रसायन युक्त पैकेज्ड खाद्य पदार्थ व अन्य घरेलू आवश्यकता के उत्पाद मालवाहको सेआपूर्ति कर बेचे जा रहे हैं। अब क्योंकि उनका संबंध दिल्ली से लेकर भोपाल तक मुख्यमंत्री, राजस्व मंत्री, प्रधान सचिव, आयुक्त सीधा रहता है इसलिए उनको सीधा महीना पहुंचा देते हैं। यही कारण है कि आयुक्त अपने ही 6विभाग की एंटी विजन ब्यूरो विंग और सभी 80 वृत्तो के अधिकारियों को मैदान में जाकर धारा 68 और 71 के अंतर्गत माल वाहनो की जांच के नियमित अधिकार पिछले 3 सालो से नही दे रहा है। जबकि माल वाहनो की जांच प्रदेश के 40 से ज्यादा कर नाको पर ही पुनः खोलकर की जानी चाहिए और यदि मोदी के मित्रो के कारण नहीं खोली जा पा रही है। तो मोदी के जाने पर पुनः खोलकर प्रदेश के राजस्व को बढ़ाया जाना चाहिए। दूसरी तरफ भोपाल में एंटी इवेजन में वर्षों से कुंडली मारे बैठे उपायुक्त गणेश कंवर को तत्काल हटाई जाना चाहिए, ठीक है मोटी कमाई कर बैठे रहने के लिए मोटा भुगतान कर रहा है। परंतु बपौती तो किसी की नही है। अधिकांश महिला अधिकारी जो 12:00 बजे आती है। और 4:00 बजे गायब हो जाती हैं। के साथ ही सभी अधिकारियो की भी उपस्थिती फजक पर या वैद्युतकीय उपस्थिति यंत्र पर होनी चाहिए। वैसे कुछ दिन पूर्व भी अपर आयुक्त श्रीमती रजनी सिंह ने अचानक चेतक चेंबर मे चुनाव से पूर्व जांच की थी। बाद में वृत्तो व संभागीय कार्यालय के अधिकारियों को अनुपस्थिति के संबंध में चमकाने के लिए पत्र भी जारी किए थे। जिससे थोड़ी गर्मी आई थी।

वाणिज्य कर विभाग में जब 1 जुलाई 2017 को जीएसटी ठोक दिया गया। पुराने नियम कानून परिपत्र सब अपास्त कर दिए गए। नई जीएसटी में किसी भी प्रकार से कोई जानकारी सूचना का अधिकार में देने के लिए प्रतिबंधित नही किया गया, तो भी हरामखोर जालसाजो के अड्डे मुख्यालय से लेकर प्रदेश के 6 एंटी इवेजन विंग, सभी वृत, अपील, संभागीय अंकेक्षण कार्यालय जानकारी देने से कैसे बच सकते है? फिर भी हरामखोर जलसाज जानकारी न देने के लिए दलील देते रहते हैं। जहां तक धारा 4 के 25 बिंदुओं का सवाल है। साधनो की कमी स्टाफ का अभाव बता कर 19 साल से बच रहे हैं। यही कारण है कि हर नया आयुक्त आते ही कंप्यूटरो प्रिंटरो की भारी मोटे कमीशन पर खरीदी करता है। संभाग दो इंदौर के बारे में मैंने पूर्व में लिखा था की किस प्रकार से पुराने कंप्यूटर प्रिंटर सर्वर व अन्य अनुपयोगी सामग्री मिट्टी के भाव बेचने का षड्यंत्र कर मोटी कमाई की गई। पर आज तक उस पर कोई कार्रवाई नहीं हुई।

देश के 10 करोड़ व्यापारियों उद्योगों को नष्ट करने का षड्यंत्र

पेज 1 का शेष

तब मैंने चौंक कर पूछा कि एलोपैथी जब संभावनाओं का विज्ञान है। तो ट्रायल एंड एरर या कोशिश करो सफलता मिलने तक गलतियां करो। अर्थात किसी भी बीमारी में किसी भी दवा को दे दो, ठीक हो गया तो ठीक है और मर गया तो मर गया। जैसे हाल ही के कोविशील्ड के बूस्टर आदि के टीके से संभावना जिंदगी की बता कर जबरदस्ती मोटी कमाई करने 100 करोड़ लोगों को लगाया, अब अगर लोग अचानक हार्ट अटैक से मर रहे है तो मरना उनकी नियति है।

जबकि आयुर्वेदिक यूनानी और होम्योपैथी में संभावनाओं का सिद्धांत नहीं मानव शरीर में उत्पन्न हुए लोगों को निकटतम प्राप्त शारीरिक बीमारियों के लक्षण और उससे उत्पन्न उपद्रवों के समन की निश्चित औषधीयों से व्यवस्थाएं की जाती है। यही हाल लाखों सालों से उपयोग किया जा रहे अनाजों दलहन तिलहन फल फूल सब्जियां मसाले जो सभी आयुर्वेदिक औषधियां भी हैं। मानव की क्षुधा शांत करने शरीर को ऊर्जा देने के लिए बनाए गए भोजन में उपयोग किए जाने से स्वादिष्ट एवं रुचिकर हो जाता है।

पर उन खाद्य पदार्थों के औषधि एवं चिकित्सीय गुणों को नष्ट करने एवं अधिक मात्रा में पैदा करने के लिए जो अन्य प्रकार के कीटनाशक खाद आदि का प्रयोग किया जा रहा है उनसेउनमें विषैले तत्वों की मात्रा रासायनिक विश्लेषण में पाई जाती है जिसके लिए स्वयं अमेरिका और उसकी बहुराष्ट्रीय कंपनियां ही जिम्मेदार हैं। बेशक अमेरिकी कंपनियां कबीलो पर नियंत्रण व मोटी कमाई के षड्यंत्रों के लिए जो हाइब्रिड, जीएम जेनेटिकली मॉडिफाइड और बीटी बायोटेक्निकल मोडिफाइड बीज तैयार किए गए। उन्होंने अपनी लाखों साल पुरानी अनुवांशिक औषधि गुणवत्ता खोने के साथ वे मानव शरीर के लिए भी घातक होने लगे हैं उसके लिए भी अमेरिका ही जिम्मेदार है।

शासन के 10 साल की उपलब्धियां गिनाने को नहीं

5वें व अंतिम चरण के भाषणों में उपलब्धिहीन सत्ताधीश... विपक्षी घोषणा पत्र पढ़कर व्याख्या कर रहे, स्वयं के खाते में तो बर्बादियां हैं

दो-तिहाई सीटों पर मतदान के बाद पीएम मोदी को आगे की राह नहीं सूझ रही...

चार चरण के चुनावों के बाद अब देश ऐसे मुकाम पर खड़ा है, जहां से एनडीए और इंडिया गठबंधन दोनों के लिए रस जीतने के लिए दिन-रात एक करने की जरूरत है। अप्रत्याशित रूप से इस बार के चुनाव में भारी उलटफेर देखने को मिल रहा है। जैसे-जैसे चुनाव अपने अंतिम चरण की ओर बढ़ रहा है, आम लोगों के भीतर का जमा गुस्सा मतदान पेटियों में जमा होकर सत्तारूढ़ दल के लिए एक बड़े बवंडर के तौर पर तब्दील हो रहा है। भाजपा-आरएसएस नेताओं और कार्यकर्ताओं के उत्साह में कमी और विपक्षी एकता में लगातार इजाफा हो रहा है।

शायद ही किसी ने इस बात की कल्पना की हो कि जमीन पर आम मतदाताओं के रुख और कांग्रेस पार्टी के चुनावी घोषणापत्र के आगे भारी बहुमत से जीतने वाली विश्व की सबसे बड़ी पार्टी होने का दावा करने वाली भाजपा के सबसे बड़े नेता नरेंद्र मोदी को अपने भाषणों में 10 वर्षों के कामकाज और 2047 के विजन डॉक्यूमेंट की जगह कांग्रेस के घोषणापत्र और गारंटियों को अपने भाषणों का आधार बनाना पड़ेगा। हिंदू-मुस्लिम, मंगलसूत्र, भैंस और टेंपो में अडानी-अंबानी द्वारा नोट भर-भरकर कांग्रेस के दफ्तर में खेप पहुंचाने जैसे बचकाने बयानों के बाद जौनपुर की सभा में उन्होंने उत्तर-दक्षिण भारत विवाद तक को हवा देने की कोशिश की।

हर चरण के बाद भाजपा के लिए मुश्किलें पहले से ज्यादा

बता दें कि चार चरण के बाद दक्षिण भारत का चुनावी अभियान पूरा हो चुका है। तमिलनाडु, कर्नाटक और केरल के बाद चौथे चरण में आंध्र और तेलंगाना राज्य के चुनाव संपन्न हो चुके हैं। अब सारा फोकस उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र जैसे बड़े राज्यों सहित दिल्ली, पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश की ओर शिफ्ट हो चुका है। बनारस में हुए भव्य रोड शो में बिहार के मुख्यमंत्री को छोड़ एनडीए के सभी राज्यों के मुख्यमंत्री अपनी उपस्थिति दर्ज कराने पहुंचे थे।

अब खबर आ रही है कि इतने बड़े पैमाने पर सरकारी तामझाम और पानी की तरह पैसा बहाने के बावजूद विभिन्न राज्यों से भाजपा के कार्यकर्ताओं की मौजूदगी ने स्थानीय मतदाताओं के मुंह का जायका बिगाड़ दिया है। इस भव्य आयोजन को इस उम्मीद से भी किया गया था, ताकि पूर्वांचल सहित यूपी से सटे बिहार के लोकसभा क्षेत्रों को भी प्रभावित किया जा सके। लेकिन इसके लिए आम मतदाताओं का मूड अगर मौजूदा सरकार के पक्ष में हो, तभी इसका सकारात्मक असर भी पड़ता, जिसके लिए कुछ खास नहीं किया जा रहा है।

महिला वोटरों के बीच भाजपा की लोकप्रियता में कमी

इस बार चुनाव में कम वोटिंग को लेकर तरह-तरह के कयास लगाये जा रहे हैं। इंडिया गठबंधन के समर्थकों का यह तर्क काफी हद तक गले उतरता है कि सरकार के खिलाफ वोट करने वाले तो वोटिंग को ले आ रहे हैं, लेकिन मोदी के 10 वर्ष के कार्यकाल से निराश उनके समर्थक इस बार वोटिंग के लिए खास उत्साहित नहीं हैं। द इंडियन एक्सप्रेस ने भी अपनी एक रिपोर्ट में खुलासा किया है कि इस बार महिला मतदाताओं का मत प्रतिशत गिरा है। कुछ राज्यों को छोड़ दें तो अधिकांश राज्यों में पुरुषों की अपेक्षा महिलाएं कम मतदान के लिए आगे आई हैं। रिपोर्ट में यह भी देखा गया है कि 2019 में जिन सीटों पर भाजपा जीती थी, उन सीटों पर इंडिया गठबंधन की तुलना में कम मतदान हुआ है। तीन चरण के चुनावों पर आधारित इस रिपोर्ट में कहा गया है कि पुरुष मतदाताओं के वोट प्रतिशत में 2.1% की गिरावट की तुलना में महिलाओं के मत प्रतिशत में 2.7% की गिरावट देखने को मिल रही है।

पिछले दो आम चुनावों में आमतौर पर देखा गया था कि महिला मतदाताओं का रुझान पीएम नरेंद्र मोदी के पक्ष में अधिक रहा है। लेकिन 2019 के बाद उत्तर प्रदेश, मणिपुर और दिल्ली में पहलवान महिला खिलाड़ियों के साथ सरकार ने जिस प्रकार की बेरुखी और महिला विरोधी रुख दिखाया है, उसने मोदी की 'बेटी पढ़ाओ-बेटी बचाओ' नारे की हवा निकाल दी है। उज्ज्वला गैस स्कीम के तहत जिन करोड़ों महिलाओं को लकड़ी के धुएं से निजात दिलाने की बात मोदी जी ने कही थी, 5 वर्ष में दोगुने सिलेंडर के दामों से गरीब महिला मतदाता खुद को छला महसूस कर रही हैं। इसके विपरीत, दिल्ली और कर्नाटक में महिलाओं के लिए मुफ्त बस सेवा जैसी योजनायें आकर्षित कर रही हैं, और कांग्रेस की महिलाओं और महिला श्रमिकों के लिए किये जा रहे वादों के प्रति आकर्षण बढ़ा है।

अब उत्तर बनाम दक्षिण भारत को तूल देने की कोशिश

कल पीएम नरेंद्र मोदी जौनपुर और प्रतापगढ़ संसदीय लोकसभा के अपने प्रत्याशियों के समर्थन में जनसभा को संबोधित करते हुए कुछ नए विवादों को हवा दे गये। मोदी ने उत्तर प्रदेश में इंडिया गठबंधन के मुख्य घटक दल कांग्रेस और समाजवादी पार्टी पर हमला करते हुए कहा, 'ये कांग्रेस और सपा के खेल खतरनाक हैं। ये दो शहजादे यहां पर आपसे वोट की मांग कर रहे हैं। यहां पर इन शहजादों की नीति आपसे वोट मांगने की है, जबकि दक्षिण में ये उत्तर प्रदेश के लोगों को अपमानित कराते हैं, गालियां दिलवाते हैं। उत्तर प्रदेश के लोगों के लिए दक्षिण में अनाप-शनाप भाषा बोलते हैं। ये लोग सनातन धर्म को गालियां दिलवाते हैं। इनके साथी तमिलनाडु में डीएमके के लोग हों, कर्नाटक और तेलंगाना में कांग्रेस के लोग हों, ये लोग यूपी के लोगों को गालियां देते हैं। जब इनसे कहो तो सपा और कांग्रेस वाले अपने कान में रुई डाल लेते हैं। क्या इंडी गठबंधन को माफ़ कर देंगे क्या? हम यूपी के लोगों को गाली देने वालों को माफ़ कर देंगे क्या?'

इसके बाद उन्होंने भाजपा के पक्ष में वोट की अपील करते हुए कहा, 'साथियों विकसित भारत बनाने के लिए भाजपा को जिताना है, हम भारत को मजबूत बनाना है।' इसके बाद उन्होंने पूर्वांचली लहजे

में कहा, 'ई बतावा हम इहां से जीत के लिए आश्वस्त होई के जाईं ना? बोला? अरे फिर से बोला? मछली शहर में भी कमल के फूल खिली न? बोला खिली न?'

जौनपुर सीट पर भाजपा ने पूर्व कांग्रेसी कृपाशंकर सिंह को मुंबई से आयातित किया है। इस सीट पर बाहुबली और पूर्व सांसद धनंजय सिंह के दावे के बाद उनकी गिरफ्तारी और मुख्यमंत्री आदित्यनाथ के साथ उनकी नजदीकियों की चर्चा के बीच उनकी पत्नी श्रीकला रेड्डी को बसपा ने अपना उम्मीदवार बनाकर मुश्किल खड़ी कर दी थी। लेकिन पिछले दिनों अचानक से बसपा ने उनका नाम वापस ले लिया, और बेंगलुरु में गृहमंत्री अमित शाह के साथ प्रतापगढ़ के कुंडा के विधायक और बाहुबली राजा भैया की मुलाकात के बाद धनंजय सिंह का भी भाजपा को समर्थन ने जौनपुर संसदीय क्षेत्र की जनता को असहाय सा बना दिया था। लेकिन दो दिन पहले राजा भैय्या के समाजवादी पार्टी के पक्ष में 3 संसदीय क्षेत्र पर समर्थन की घोषणा ने भाजपा के बने बनाये खेल को बिगाड़ दिया है। इससे यह भी पता चलता है कि उत्तर प्रदेश की हवा कैसे तेजी से बदल रही है, जो राजा भैय्या जैसे लोगों को भी पाला बदलने के लिए मजबूर कर रही है।

इसी प्रकार प्रतापगढ़ में भी सभा को संबोधित करते हुए पीएम नरेंद्र मोदी ने जी20 की अध्यक्षता और मून मिशन की सफलता से अपनी बात शुरू कर विपक्ष के उन्हें सत्ता से हटाने की मंशा पर सवाल खड़े किये। अपने भाषण से उन्होंने यह जाहिर करने की कोशिश की कि स्थिर और मजबूत सरकार ही देश को नई ऊंचाइयों पर ले जाने में सक्षम है। उनका इशारा इंडिया गठबंधन के 27 दलों की मिलीजुली सरकार की संभावना के मद्देनजर थी। उन्होंने अपने भाषण में कहा, '5 साल में पांच पार्टी के पांच पीएम। हर साल एक नया पीएम। लूट का बराबर मौका दिया जायेगा। क्या आपको हर साल नया पीएम मंजूर है? ये देश को बर्बाद करेंगे या नहीं करेंगे?'

ध्यान से देखें तो पीएम मोदी स्वयं मान रहे हैं कि इंडिया गठबंधन बहुमत पाने के नजदीक है। ऐसे में उसके खिलाफ अस्थिर और समझौतावादी सरकार बनाने की आशंका को अगर मतदाताओं के गले उतारा जा सके तो वे भाजपा के पक्ष में वोट दे सकते हैं। यह एक बड़ा शिफ्ट है, जिसे नोट किया जाना चाहिए।

जीडीपी वृद्धि और उसका सच

देश की जीडीपी को लेकर उनके द्वारा दिया गया ज्ञान तो हैरान करने वाला था। पीएम मोदी ने प्रतापगढ़ के मतदाताओं को संबोधित करते हुए बताया, 'देश आजाद हुआ तो हम दुनिया में छठे स्थान पर थे। इन लोगों ने देश को ऐसे चलाया कि हम 6वें स्थान से खिसककर 11वें स्थान पर चले गये थे। फिर आपने मोदी को मौका दिया और आज हम देश की अर्थव्यवस्था को दुनिया के नंबर 5 पर ले आये हैं। लेकिन मोदी इतने से खुश होने वाला और रुकने वाला नहीं है। हमने तय किया है कि तीसरी बार सरकार में आने पर हम हिंदुस्तान को दुनिया में तीसरे नंबर की ताकत बनाकर रहेंगे। ये मोदी की गारंटी है।'

अब ये ज्ञान मोदी जी किस आधार पर जी में बांट रहे हैं? 1947 में जब देश आजाद हुआ था, तब देश की अर्थव्यवस्था बर्बाद थी, और विश्व की जीडीपी में भारत का योगदान 3% था। 1987 के आंकड़े भारत की अर्थव्यवस्था को महज 283.75 बिलियन डॉलर बताते हैं। 2004 में जब मनमोहन सिंह के नेतृत्व में यूपीए सरकार बनी थी, भारत की अर्थव्यवस्था 721.59 बिलियन डॉलर की आंकी गई थी जो 2014 में बढ़कर 2 ट्रिलियन डॉलर से अधिक हो चुकी थी। इसका अर्थ है 10 वर्षों में भारत में करीब तीन गुना वृद्धि हुई थी। इसकी तुलना में मोदी राज के 10 वर्षों में यह बढ़कर 2023 में 4 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंची है, जो पिछले दस वर्षों में दोगुनी हुई है। जीडीपी में भारत से आगे अमेरिका, चीन, जापान और जर्मनी हैं, जिनमें जापान और जर्मनी को पीछे छोड़ने के लिए भारत को 2-3 वर्ष और लगेंगे, क्योंकि दोनों देशों की विकास दर 1% के आसपास रहने वाली है। यह बात विश्व में सभी जानते हैं, इसलिए मोदी सरकार या कोई भी सरकार आये भारत को विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने से कोई रोक नहीं सकता है।

बड़ा सवाल है क्या भारत की बहुसंख्यक आबादी के शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के मुद्दे पर पीएम मोदी अपनी चुप्पी तोड़ेंगे? प्रेस के समक्ष पिछले दस साल से कतराने वाले प्रधानमंत्री आजकल ताबड़तोड़ आयोजित इंटरव्यू दे रहे हैं। कल ही आजतक और इंडिया टुडे ग्रुप के चार पत्रकारों से 90 मिनट लंबी बातचीत में उनके साधारण से सवालों पर अपने मन की बात सुनाते हुए पीएम एक बार भी महंगाई, बेरोजगारी, अग्निवीर, किसानों को दोगुनी आय के मुद्दे पर पूरी तरह से खामोश बने रहे। 2024 का चुनाव अब एक तिहाई रह गया है। 20 मई को 49 लोकसभा सीटों पर मतदान होना है। भाजपा से आस लगाये करोड़ों हिंदू आस्थावान मतदाता अभी भी रोजगार, किसान और अग्निवीर के मुद्दे पर राहुल गांधी की तरह ठोस गारंटी सुनना चाहते हैं। लेकिन पिछले 10 वर्षों से देश को धर्म और विभाजनकारी नीति पर हांकने में सक्षम भाजपा के लिए 2004 के अपने चुनावी वादों को दोहराने में कितनी शर्मिंदगी महसूस हो रही है, इसका अनुमान सहज लगाया जा सकता है। बिग कॉर्पोरेट परस्त नीतियों से बहुसंख्यकों की रोजी-रोटी और शिक्षा-स्वास्थ्य के मुद्दों पर लौटना महज मृग-मरीचिका साबित होने जा रही है, जिसे राहुल गांधी लगातार केंद्र में रखकर 4 जून को भाजपा की विदाई से जोड़, भाजपा के शीर्ष नेतृत्व के लिए संकट को बढ़ाते जा रहे हैं।

साप्ताहिक समय माया

गर्मी में बच्चों को पिलाएं ये हेल्दी ड्रिंक्स

रहेंगे पूरे दिन एनर्जेटिक और हाइड्रेटिड

गर्मियों में ये सुनिश्चित करें कि आपका बच्चा पूरे दिन सक्रिय रहता है और डिहाइड्रेशन को रोकता है। इसके लिए उन्हें पौष्टिक और ताजा भोजन और पेय प्रदान करना महत्वपूर्ण है। ऐसे में आज हम आपके बच्चे को गर्मियों में एनर्जेटिक बनाएं रखने के लिए कुछ ड्रिंक्स बताने जा रहे हैं जिनके सेवन से आपका बच्चा गर्मी को मात देकर पूरे दिन एक्टिव बना रहेगा, तो चलिए जानते हैं।

छाछ

गर्मियों के लिए एक बढ़िया पेय है छाछ। इसके लिए आप 1 भाग दही लीजिए और इसमें 4 भाग पानी डाल कर अच्छी तरह मथ लीजिए। फिर धनिया पत्ती डालें, एक चुटकी नमक डालें, जीरा और हींग के साथ तड़का लगाएं और बस आपकी छाछ तैयार है।

नारियल पानी

यह गर्मियों के लिए आदर्श आहार है। यह तुरन्त हाइड्रेट करता है, एक प्राकृतिक चिलर के रूप में कार्य करता है, और इसमें खनिजों और ट्रेस तत्वों का खजाना होता है जो आपको इंस्टेंट एनर्जी प्रदान कर सकता है। प्रतिदिन 1 गिलास नारियल पानी गर्मियों की परेशानियों को दूर रख सकता है।

नींबू पानी

नींबू पानी का एक दैनिक गिलास आपके बच्चे को आवश्यक इलेक्ट्रोलाइट्स और पानी को भरने में मदद कर सकता है। आप नींबू पानी में पुदीने के पत्ते, जीरा पाउडर, थोड़ा सा सेंधा नमक और कुछ भीगे हुए चिया बीज आदि जैसी सामग्री मिला पी सकते हैं। इससे नींबू पानी का स्वाद अच्छा हो जाएगा।

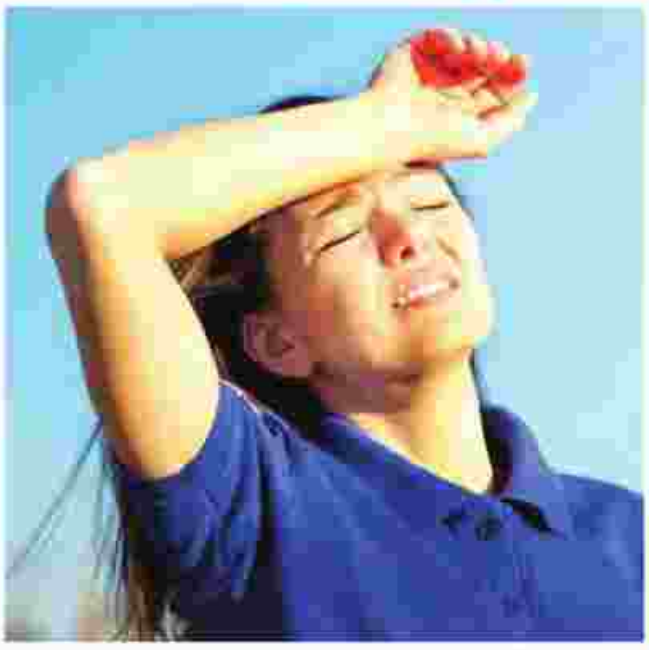

सत्तू

सत्तू को भुनी हुई चना दाल से तैयार किया जाता है। ये एक प्राकृतिक शीतलक होता है इसके साथ ही ये प्रोटीन का भी एक अच्छा स्रोत है। इसके लिए आप सिर्फ एक गिलास सत्तू ड्रिंक में कुछ किशमिश और चीनी या गुड़ मिलाकर दें। इससे आपके बच्चे में पूरे दिन के लिए पर्याप्त ऊर्जा होगी।

तरबूज

सबसे रोमांचक मौसमी फलों में से एक, यह पानी से भरपूर, पोषक तत्वों से भरपूर फल गर्मियों के लिए मेन्यू में होना चाहिए। अगर बच्चा तरबूज खाने में नखरे करता है, तो इसे कुछ पुदीने की पत्तियों के साथ मिलाकर जूस बनाकर सेवन करें।

इन पत्तियों को पानी में उबालकर पीने से कंट्रोल में रहेगा फास्टिंग शुगर

अगर आपको डायबिटीज की बीमारी है तो आपको अपने घर में इंसुलिन का पौधा लगाना चाहिए। दरअसल, इंसुलिन का पौधा, डायबिटीज में शुगर कंट्रोल करने में मदद कर सकता है। दरअसल, इन पत्तियों के अर्क में कुछ ऐसे गुण होते हैं जो कि इंसुलिन को बढ़ाने और शुगर पचाने में मदद करते हैं। आज हम आपको फास्टिंग शुगर कंट्रोल करने में इन पत्तियों के सेवन के बारे में बताएंगे। साथ ही जानेंगे इसका इस्तेमाल कैसे करें और फिर इन्हें इस्तेमाल करने के फायदे।

उबालकर पिएं इंसुलिन का पानी

अगर आपका शुगर कंट्रोल में नहीं रहता तो आपको इंसुलिन की पत्तियों को उबालकर इसके पानी का इस्तेमाल करना चाहिए। इसके लिए पहले इंसुलिन के पौधे से कुछ पत्तियों को तोड़ लें और फिर इसे धो कर 1 गिलास पानी में उबालते हुए पकाएं। जब ये पानी कम हो जाए और इसका रंग हरा हो जाए तो ऊपर से थोड़ा नमक मिलाएं। इसके बाद इस पानी का सेवन करें।

कब-कब पिएं-इंसुलिन का पानी

इंसुलिन का पानी पीने के कई फायदे हैं लेकिन, इसके लिए आपको इसे लेने के सही समय के बारे में जानना चाहिए। जैसे कि अगर आप फास्टिंग शुगर कंट्रोल करने के लिए इसे पी रहे हैं तो इसे शाम को या रात में सोने के दौरान पिएं। ये आपके शरीर में इंसुलिन की मात्रा बढ़ाकर शुगर मेटाबोलिज्म तेज करता है जिससे फास्टिंग शुगर को कम करने में मदद मिलती है।

इंसुलिन का पानी पीने के फायदे

इंसुलिन का पानी पीने के फायदे कई हैं। कई शोध बताते हैं कि नियमित रूप से इन पत्तियों का सेवन शरीर में ऐसी स्थिति पैदा करता है कि जिससे शरीर को लगता है कि इंसुलिन बढ़ गया है और इसके हिसाब से शुगर पचने लगता है। इसके अलावा इन पत्तियों में एंटीबैक्टीरियल, मूत्रवर्धक और कुछ एंटी इंफ्लेमेटरी गुण भी होते हैं।

बच्चों के लिए भी जरूरी है योगाभ्यास

बदलते लाइफस्टाइल के चलते बुजुर्ग ही नहीं, बल्कि बच्चे भी कई गंभीर समस्याओं के शिकार हो रहे हैं। हम सभी जानते हैं कि योग से अपने तन मन को स्वस्थ रखा जा सकता है। अगर हम अपने बच्चों को बचपन से ही योग करने की आदत डालते हैं, तो उनके कई खतरनाक बीमारियां दूर रहेंगी। नियमित रूप से योग करने से बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास काफी अच्छा रहेगा। इसलिए योग सिर्फ व्यस्कों और बुजुर्गों को ही नहीं, बल्कि बच्चों को भी नियमित रूप से करना चाहिए। लेकिन बच्चों को योग कराते समय ध्यान देने की आवश्यकता होती है। आइए जानते हैं बच्चों को योग कराना कितना है जरूरी और उन्हें योग कराते समय किन बातों का ख्याल रखना चाहिए।

बच्चों के लिए योग

सबसे पहले बच्चों के बैठने का तरीका देखें, उन्हें योग के आसन पर कमर सीधी करके बैठने के लिए कहें।

खड़े होने वाले योगासन में एकदम सीधा खड़ा होने के लिए कहें।

योग के दौरान बच्चों को लंबी सांस लेने के लिए कहें, इससे योग का भरपूर लाभ उन्हें मिलेगा।

योग कराते समय बच्चों को बीच-बीच में योग के महत्व और फायदे बताएं।

बच्चों को योग कराते समय उच्चारण कराएं, इससे वे मनोरंजन का एहसास करेंगे।

अगर हम अपने बच्चों को बचपन से ही योग करने की आदत डालते हैं, तो उनसे कई खतरनाक बीमारियां दूर रहेंगी। नियमित रूप से योग करने से बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास काफी अच्छा रहेगा।

बच्चों के लिए योग के फायदे

योग करने से बच्चे अधिक सक्रिय बनते हैं। इतना ही नहीं, इससे उनका शरीर लचीला बनता है। इससे इम्यूनिटी मजबूत होती है और इससे हम कई बीमारियों से बच पाते हैं।

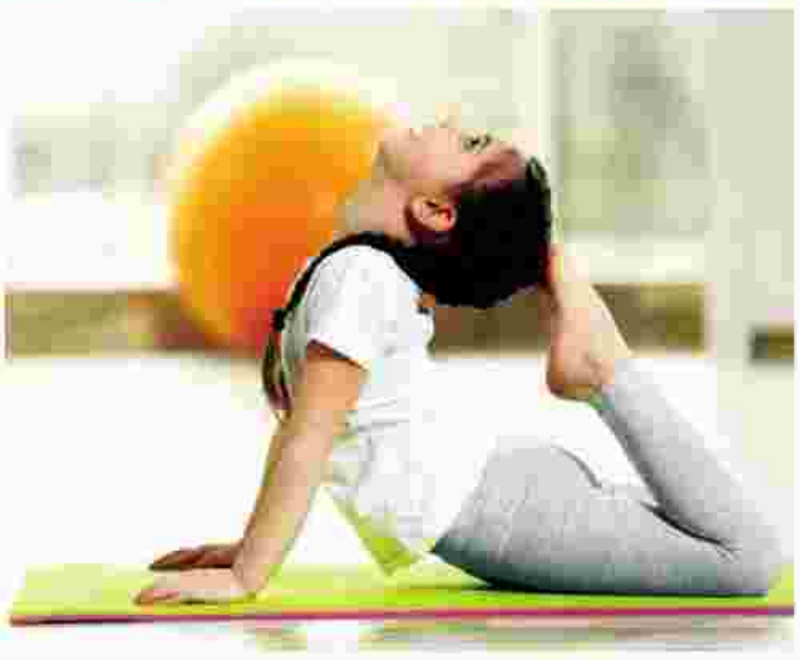

योग करने से बच्चों का ध्यान केंद्रित होता है और इससे बच्चों के मस्तिष्क का विकास अच्छे तरीके से होता है।

इससे बच्चे आत्मनिर्भर और एक्टिव रहते हैं।

मौसमी बीमारियों से बचे रहते हैं।

मेडिटेशन और सूर्य नमस्कार करने से चंचल बच्चों का मन शांत होता है।

योगासन से बच्चे तनावग्रस्त और डिप्रेशन जैसी समस्याओं से बचते हैं।

योग के दौरान ध्यान रखने योग्य बातें

योगासन करते समय बच्चों का पेट खाली होना चाहिए।

सप्ताह में कम से कम 5 दिन बच्चों को योग जरूर कराएं।

बच्चों को एक साथ अधिक एक्सरसाइज ना कराएं, बल्कि धीरे-धीरे योगाभ्यास करवाएं। जैसे शुरू के सप्ताह में सिर्फ 15 मिनट, दूसरे सप्ताह में 30 मिनट तक योग कराएं।

योग के दौरान बच्चों को बीच-बीच में रिलैक्स करने के लिए कहें।

श्री हरि के चौथे अवतार

भगवान नरसिंह

21 मई को मनाई जाएगी नरसिंह जयंती

शुभ मुहूर्त और पूजा विधि

नरसिंह श्री हरि के चौथे अवतार हैं और उनका जन्म ऋषि कश्यप और उनकी पत्नी दिति से हुआ था। बता दें नरसिम्हा देव को आधे मनुष्य और आधे शेर के रूप में दर्शाया गया है जो शक्ति और ज्ञान के संतुलन का प्रतीक हैं। ऐसी मान्यता है कि वह अपने भक्तों की रक्षा और बुरी ताकतों को नष्ट करने के लिए पृथ्वी पर प्रकट हुए थे। नरसिंह जयंती का पर्व बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है। इस दिन साधक भगवान विष्णु के नरसिंह अवतार की पूजा करते हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार, अपने भक्त प्रह्लाद की रक्षा के लिए भगवान विष्णु ने इसी तिथि पर नरसिंह का अवतार लिया था। नरसिंह श्री हरि के चौथे अवतार हैं और उनका जन्म ऋषि कश्यप और उनकी पत्नी दिति से हुआ था। बता दें, नरसिम्हा देव को आधे मनुष्य और आधे शेर के रूप में दर्शाया गया है, जो शक्ति और ज्ञान के संतुलन का प्रतीक हैं। ऐसी मान्यता है कि वह अपने भक्तों की रक्षा और बुरी ताकतों को नष्ट करने के लिए पृथ्वी पर प्रकट हुए थे।

कब है नरसिंह जयंती 2024

हिंदू पंचांग के अनुसार, वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि की शुरुआत 21 मई, 2024 दिन मंगलवार शाम 05 बजकर 39 मिनट पर होगी। वहीं, इस तिथि का समापन अगले दिन 22 मई, 2024 को शाम 06 बजकर 47 मिनट पर होगा। उदयातिथि को देखते हुए, इस साल नरसिंह जयंती 21 मई दिन मंगलवार को मनाई जाएगी।

पूजा-विधि

नरसिंह भगवान की पूजा शाम के समय करने का विधान है। नरसिंह जयंती के दिन आपको सुबह तो स्नान-ध्यान करना ही चाहिए, लेकिन शाम के समय पूजा से पहले भी स्वच्छ होना चाहिए। इसके बाद पूजा स्थल पर भगवान नरसिंह की प्रतिमा या तस्वीर आपको स्थापित करनी चाहिए। प्रतिमा स्थापित करने के बाद पंचामृत से भगवान का अभिषेक करना चाहिए और चंदन का तिलक लगाना चाहिए। इस दिन संभव हो तो देशी घी का दीपक भगवान के सामने जलाएं। इसके बाद नीचे दिए गए मंत्रों का जप करें।

ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्यु मृत्युं नमाम्यहम्॥
ॐ नृम नरसिंहाय शत्रुबल विदीर्णाय नमः॥
'ॐ नृम मलोल नरसिंहाय पूरय-पूरय'

इन मंत्रों का यथासंभव जप करने के बाद पूजा के अंत में आपको नरसिंह भगवान की आरती करनी चाहिए। अगर व्रत रखने वाले हैं तो, व्रत का पारण अगली तिथि को किया जाना चाहिए। ऐसा माना जाता है कि नरसिंह भगवान की पूजा आराधना करने से भक्तों की मनोकामनाएं पूरी होती हैं।

व्रती एक बार ही भोजन करें। अगले दिन मुहूर्त के अनुसार व्रत का पारण करें। तामसिक चीजों का सेवन भूलकर भी न करें। पूजा में हुई गलती के लिए क्षमायाचना करें।

नरसिंह जयंती की कथा

सत्ययुग में एक अत्यंत निर्दयी असुर हिरण्यकशिपु था. कठिन तपस्या से उसने ब्रह्मा जी से वरदान प्राप्त किया था कि न तो उसे मनुष्य मार सके, न ही पशु, न तो उसे दिन में मारा जा सके न ही रात में, न घर के अंदर न ही बाहर और न ही किसी अस्त्र से या शस्त्र से उसका वध किया जा सके. वरदान पाकर उसमें अहंकार आ गया और वो खुद को भगवान समझने लगा. लोगों पर उसके अत्याचार बढ़ गए. तीनों लोकों में सभी उससे त्रस्त हो गए.

प्रह्लाद को ऐसे किया प्रताड़ित

हिरण्यकशिपु चाहता था कि लोग विष्णु जी की नहीं अपितु उसकी पूजा करें. असुर राजा हिरण्यकशिपु का बेटा प्रह्लाद भगवान विष्णु का परम भक्त था. उसने प्रहलाद को भगवान विष्णु की भक्ति करने से रोकने के लिए अनेक प्रयास किए. उसे खाई से फेंकना चाहा, खौलते तेल की कड़ाहे में डलवा दिया, बहन होलिका के साथ दहकती अग्नि में बैठा दिया लेकिन हर बार विष्णु जी ने प्रह्लाद को बचा लिया.

नरसिंह भगवान ने ऐसे किया हिरण्यकशिपु का अंत

इसके बाद हिरण्यकशिपु क्रोध में सुध खो बैठा. स्वयं प्रह्लाद को प्रताड़ित करने लगा तब एक खम्भे को फाड़कर विष्णु जी प्रकट हुए. उनका भयंकर रूप देखकर सभी भयभीत हो गए.

विष्णु जी ने संध्या के समय घर की चौखट पर और अपनी गोद में उठाकर हिरण्यकशिपु की छाती को अपने नखों से चीर दिया. इस तरह अधर्मी हिरण्यकशिपु का अन्त हुआ. इसलिए कहा जाता है कि ईश्वर की भक्ति सच्चे मन से की जाए तो वह स्वंय साधक की रक्षा करने पृथ्वी पर किसी न किसी रूप में आ ही जाते हैं.

।। नरसिंह चालीसा ।।

मास वैशाख कृतिका युत, हरण मही को भार।
शुक्ल चतुर्दशी सोम दिन, लियो नरसिंह अवतार॥
धन्य तुम्हारो सिंह तनु, धन्य तुम्हारो नाम।
तुमरे सुमरन से प्रभु, पूरन हो सब काम॥
नरसिंह देव में सुमरों तोहि
धन बल विद्या दान दे मोहि॥1॥
जय-जय नरसिंह कृपाला
करो सदा भक्तन प्रतिपाला॥2॥
विष्णु के अवतार दयाला
महाकाल कालन को काला॥3॥
नाम अनेक तुम्हारो बखानो
अल्प बुद्धि में ना कछु जानो॥4॥
हिरणाकुश नृप अति अभिमानी
तेहि के भार मही अकुलानी॥5॥
हिरणाकुश कयाधू के जाये
नाम भक्त प्रहलाद कहाये॥6॥
भक्त बना विष्णु को दासा
पिता कियो मारन परसाया॥7॥
अस्त्र-शस्त्र मारे भुज दण्डा
अग्निदाह कियो प्रचंडा॥8॥
भक्त हेतु तुम लियो अवतारा
दुष्ट-दलन हरण महिभारा॥9॥
तुम भक्तन के भक्त तुम्हारे
प्रह्लाद के प्राण पियारे॥10॥
प्रगट भये फाड़कर तुम खम्भा
देख दुष्ट-दल भये अचंभा॥11॥
खड्ग जिह्व तनु सुंदर साजा
ऊर्ध्व केश महादृष्ट विराजा॥12॥
तप्त स्वर्ण सम बदन तुम्हारा
को वरने तुम्हरो विस्तारा॥13॥
रूप चतुर्भुज बदन विशाला
नख जिह्वा है अति विकराला॥14॥
स्वर्ण मुकुट बदन अति भारी
कानन कुंडल की छवि न्यारी॥15॥
भक्त प्रहलाद को तुमने उबारा
हिरणा कुश खल क्षण मह मारा॥16॥
ब्रह्मा, विष्णु तुम्हें नित ध्यावे
इंद्र-महेश सदा मन लावे॥17॥
वेद-पुराण तुम्हरो यश गावे
शेष शारदा पारन पावे॥18॥
जो नर धरो तुम्हरो ध्याना
ताको होय सदा कल्याना॥19॥
त्राहि-त्राहि प्रभु दुःख निवारो
भव बंधन प्रभु आप ही टारो॥20॥
नित्य जपे जो नाम तिहारा
दुःख-व्याधि हो निस्तारा॥21॥
संतानहीन जो जाप कराये
मन इच्छित सो नर सुत पावे॥22॥
बंध्या नारी सुसंतान को पावे
नर दरिद्र धनी होई जावे॥23॥
जो नरसिंह का जाप करावे
ताहि विपत्ति सपने नहीं आवे॥24॥
जो कामना करे मन माही
सब निश्चय सो सिद्ध हुई जाही॥25॥
जीवन मैं जो कछु संकट होई
निश्चय नरसिंह सुमरे सोई॥26॥
रोग ग्रसित जो ध्यावे कोई
ताकि काया कंचन होई॥27॥
डाकिनी-शाकिनी प्रेत-बेताला
ग्रह-व्याधि अरु यम विकराला॥28॥
प्रेत-पिशाच सबे भय खाए
यम के दूत निकट नहीं आवे॥29॥
सुमर नाम व्याधि सब भागे
रोग-शोक कबहूं नहीं लागे॥30॥
जाको नजर दोष हो भाई
सो नरसिंह चालीसा गाई॥31॥
हटे नजर होवे कल्याना
बचन सत्य साखी भगवाना॥32॥
जो नर ध्यान तुम्हारो लावे
सो नर मन वांछित फल पावे॥33॥
बनवाए जो मंदिर ज्ञानी
हो जावे वह नर जग मानी॥34॥
नित-प्रति पाठ करे इक बारा
सो नर रहे तुम्हारा प्यारा॥35॥
नरसिंह चालीसा जो जन गावे
दुःख-दरिद्र ताके निकट न आवे॥36॥
चालीसा जो नर पढ़े-पढ़ावे
सो नर जग में सब कुछ पावे॥37॥
यह श्री नरसिंह चालीसा
पढ़े रंक होवे अवनीसा॥38॥
जो ध्यावे सो नर सुख पावे
तोही विमुख बहु दुःख उठावे॥39॥
'शिवस्वरूप है शरण तुम्हारी
हरो नाथ सब विपत्ति हमारी'॥40॥
चारों युग गायें तेरी महिमा अपरंपार।
निज भक्तनु के प्राण हित लियो जगत अवतार॥
नरसिंह चालीसा जो पढ़े प्रेम मगन शत बार।
उस घर आनंद रहे वैभव बढ़े अपार॥

साप्ताहिक समय माया

रूस को बर्बाद करने यूक्रेन को सतत् हथियार आपूर्ति

पेज 1 का शेष

बर्लिन की दीवार गिरने और सोवियत संघ के घटक गणराज्यों में विघटित होने के लगभग तीन दशक बाद, संघर्ष के खतरे ने एक बार फिर यूरोप को घेर लिया है, क्योंकि राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन उन क्षेत्रों को फिर से हासिल करने के लिए आगे बढ़े हैं, जिन्हें मॉस्को ने 1991 में सोवियत और संभवतः फिर से हासिल करने की कोशिश में खो दिया था। यहाँ तक कि ज़ारवादी महिमा भी।

कई स्थानीय और विदेशी सुरक्षा विश्लेषक और राजनयिक इस बात से सहमत हैं कि यूक्रेन में मौजूदा घेराबंदी जैसी स्थिति के तहत, अमेरिका और साथी यूरोपीय शक्तियों की कठोर प्रतिक्रिया केवल हथियारों की गारंटी की वापसी थी, जो बदले में, निकट भविष्य के लिए हथियार निर्माताओं के लिए बड़े पैमाने पर लाभप्रदता की गारंटी थी। बिल्कुल शीत युद्ध के दशकों की तरह।

इसके अलावा, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अपने आघात और सावधानी से उबरने और अपने बुंडेसवेहर को फिर से संगठित करने के लिए अपने सकल घरेलू उत्पाद का 100 बिलियन यूरो या 2% खर्च करने का जर्मनी का निर्णय भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हथियार निर्माताओं के लिए एक वरदान होगा। रूस के सैन्यवाद पर प्रतिक्रिया देते हुए, जर्मन चांसलर ओलाफ स्कोल्ज़ ने सप्ताहांत में कहा कि इस बड़े परिव्यय में न केवल उनके देश की सेना के लिए निवेश और हथियार परियोजनाएं शामिल होंगी, बल्कि यूक्रेन को हथियार की आपूर्ति भी होगी, जिससे इसके निर्माताओं के लिए धन सुनिश्चित होगा।

2021 स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, 10 देशों ने दुनिया के 90.3% हथियार व्यापार पर एकाधिकार कर लिया। इनमें से चीन, फ्रांस, जर्मनी, रूस और अमेरिका की हिस्सेदारी 2016-20 के दौरान 75.9% थी, जबकि इज़राइल, इटली, दक्षिण कोरिया, स्पेन और यूनाइटेड किंगडम ने परिचालन रूप से सिद्ध उपकरणों की पेशकश की, जो कुल वैश्विक का 14.4% थी। सैन्य बिक्री, भारत सहित शेष विश्व - जिसका हिस्सा 0.2% था - ने शेष 9.7% प्रदान किया जिसमें बड़े पैमाने पर कम-अंत किट और घटक और उप-असेंबली शामिल थे जो बड़े उत्पादकों को आपूर्ति की गई थी।

यूक्रेन पर रूस के आक्रमण ने, सौभाग्य से, कई प्रमुख हथियार निर्माताओं को खुशी के व्यापारिक अवसर प्रदान किए हैं, जिनकी उन्होंने प्रशंसा की है। अमेरिका से समाचार रिपोर्टों से पता चला कि उदाहरण के लिए, विश्व स्तर पर सबसे उन्नत हथियार निर्माताओं में से एक, रेथियॉन और लॉकहीड मार्टिन, अपने निवेशकों को खुले तौर पर बता रहे थे कि यूक्रेन संघर्ष व्यापार के लिए अच्छा था।

रेथियॉन वायु रक्षा प्रणालियों में माहिर है, विशेष रूप से निर्देशित मिसाइलों में जिसमें घातक मानव-पोर्टेबल FIM-92 स्टिंगर प्रणाली शामिल है, जिसने 1989 में मुजाहिदीन द्वारा रूसी हेलीकॉप्टर गनशिप को घातक सटीकता के साथ मार गिराने के बाद अकेले ही सोवियत सेना को अफगानिस्तान से हटाने में तेजी ला दी थी। स्टिंगर वेरिएंट - जिसकी कीमत प्रत्येक मिसाइल के लिए 119,300 डॉलर है, बिना सहायक लॉन्चर और संबंधित उपकरणों के - जर्मनी में यूरोपीय समूह ईएडीएस द्वारा लाइसेंस-निर्मित किया गया था और, सभी संभावना में यूक्रेन के लिए यूरोपीय संघ के हथियार पैकेज का हिस्सा होगा। दूसरी ओर, लॉकहीड मार्टिन लड़ाकू विमानों, हेलीकॉप्टरों और नौसेना प्रणालियों जैसे असंख्य अन्य उत्पादों के अलावा निर्देशित ऊर्जा हथियार, हाइपरसोनिक प्रौद्योगिकी और एकीकृत वायु और मिसाइल रक्षा प्रणालियों का निर्माण करता है।

लेकिन रेथियॉन और लॉकहीड मार्टिन दोनों संयुक्त रूप से 2.5 से 4 किमी के बीच मारक क्षमता वाली उन्नत एफजीएम-148 जगो और मूल जाओ जेवलिन एंटी-टैंक मिसाइलों (एटीएम) का उत्पादन करते हैं, जो हमलावर रूसी के खिलाफ यूक्रेनी सेना के प्रमुख हमले के हथियार के रूप में उभरे हैं। कवच, इन प्लेटफार्मों में टी-72 एमबीटी शामिल हैं जो थर्मोबेरिक रॉकेट दागने में सक्षम हैं जो उतरने पर आसपास की ऑक्सीजन को सोख लेते हैं, जिससे टी90 और नव विकसित और यहां तक कि घातक टी-14 आर्मटा एमबीटी के साथ आसपास के क्षेत्र में बड़ी संख्या में लोगों की मौत हो जाती है।

तीस जेवलिन कमांड लॉन्च इकाइयां और 180 मिसाइलें, प्रत्येक की कीमत लगभग 175,200 डॉलर थी, 60 मिलियन डॉलर के हथियार पैकेज का हिस्सा थे जो अमेरिका ने संभावित रूसी सैन्य दुस्साहस की प्रत्याशा में पिछले अक्टूबर में यूक्रेन को दिया था। अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने 26 फरवरी को सैन्य सहायता में 350 मिलियन डॉलर की अतिरिक्त राशि की घोषणा की - जिसमें बड़ी संख्या में भाले भी शामिल हैं। यूक्रेन के लिए प्रस्तावित ईयू पैकेज का मूल्य अभी अज्ञात है, लेकिन यह भी होगा विश्लेषकों ने बताया कि इसमें जेवलिन्स शामिल हैं।

शिकागो स्थित पत्रिका इन दिस टाइम्स के अनुसार , रेथियॉन के सीईओ ग्रेग हेस ने अपने 25 जनवरी के 'कमाई कॉल' में, जो एक टेलीकास्ट्रेस या वेबकास्ट है जिसमें एक सार्वजनिक कंपनी एक विशिष्ट अवधि से संबंधित अपने वित्तीय परिणामों पर चर्चा करती है, इसमें पूर्वी क्षेत्र में वर्तमान तनाव भी शामिल है। यूरोप उन कारकों के रूप में जिनसे उनकी कंपनी को लाभ हुआ। उसी दिन इसी तरह की 'कमाई कॉल' में, लॉकहीड मार्टिन के प्रमुख जिम टैकलेट ने भी निवेशकों से कहा कि 'महान शक्ति प्रतिस्पर्धा (यूक्रेन पर अमेरिका और रूस के बीच) कंपनी के लिए अधिक व्यवसाय का संकेत देती है', पत्रिका ने बताया।

इसके अलावा, समाजवादी-झुकाव वाली वेबसाइट ने खुलासा किया कि जनरल डायनेमिक्स, एक अन्य प्रमुख अमेरिकी सैन्य दिग्गज जो लॉकहीड मार्टिन का एक हिस्सा है और जो श्रृंखला में अब्राम्स एमबीटी और स्ट्राइकर और अन्य लड़ाकू और सामरिक वाहनों का निर्माण भी करता है, ने हाल ही में 'इस बारे में दावा किया था' कंपनी ने पिछले रिटर्न को ऐसे (यूक्रेन जैसे) विवादों के परिणामस्वरूप देखा था। हालाँकि, इन दिस टाइम्स के अनुसार, 26 जनवरी को अपने 'कमाई कॉल' में जनरल डायनेमिक्स के सीईओ फेबे नोवाकोविच ने भविष्य के मुनाफे के बारे में अटकलें लगाने से परहेज किया था। लेकिन उन्होंने अस्पष्ट रूप से कहा था कि 'उच्च खतरे के माहौल को देखते हुए, पूर्वी यूरोप में काफी तनाव और उसके बाद बजट पर किसी भी प्रभाव के बारे में अटकलें, सलाह दिए जाने तक उचित हैं'। या, मोटे तौर पर अनुवादित, यूक्रेन में सैन्य तनाव ने कंपनी के लिए राजस्व में वृद्धि की। पत्रिका अमेरिकी सैन्य-औद्योगिक परिसर की सर्वशक्तिमानता को सुदृढ़ करने के लिए आगे बढ़ती है, जिसमें कहा गया है कि 2017 के बाद से प्रति वर्ष लगभग 700 लॉबिस्ट, या कांग्रेस के प्रति सदस्य एक से अधिक लॉबिस्ट को अपने सैन्य सामान को आगे बढ़ाने के लिए नियुक्त किया गया है। इसके अलावा, रेथियॉन, लॉकहीड मार्टिन और जनरल डायनेमिक्स वाशिंगटन में अमेरिका के सेंटर फॉर स्ट्रेटेजिक एंड इंटरनेशनल स्टडीज के सह-संस्थापक भी थे, जो यूक्रेन पर रूसी आक्रमण की स्थिति में जो बिडेन प्रशासन को तत्काल कार्रवाई करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे । युद्ध विरोधी संगठन जस्ट फॉरेन पॉलिसी के प्रमुख एरिक स्पलिंग ने पत्रिका को बताया, '(वाशिंगटन) डीसी में हर कोई जानता है कि हथियार निर्माता अमेरिकी नीति को सैन्यवाद की ओर मोड़ने में मदद कर रहे हैं, लेकिन वे आमतौर पर कम स्पष्ट होने की कोशिश करते हैं।' स्पलिंग ने कहा, वे यूक्रेन पर तनाव का फायदा उठा रहे थे क्योंकि अमेरिका ने इस क्षेत्र में हथियार डाल दिए थे, जो बिडेनापूर्ण रूप से हॉलीवुड की पैरोडी हिट फिल्म, चार्ली विल्सन के वॉर का उपहासपूर्ण उद्घोषन प्रतीत होता है । यह फिल्म अफ़ग़ानिस्तान से सोवियत सेना की बदखली सुनिश्चित करने के लिए, पाकिस्तान में स्थित अफगान मुजाहिदीन को हथियार देने के लिए अव्याश अमेरिकी कांग्रेसी चार्ली विल्सन और एक केंद्रीय खुफिया एजेंसी के संचालक के संयुक्त प्रयासों पर आधारित है, जो अमेरिका के हथियार उद्योग के लिए लाभदायक खुशी है। यूक्रेन युद्ध से उत्पन्न आकर्षक व्यावसायिक संभावनाओं पर रेथियॉन और लॉकहीड मार्टिन के सीईओ द्वारा व्यक्त किया गया उल्लास अमेरिकी राष्ट्रपति ड्वाइट आइजनहावर द्वारा अपने 1961 के विदाई भाषण में दी गई चेतावनी की याद भी दिलाता है। उस समय, द्वितीय विश्व युद्ध में विजयी अमेरिकी सेना का नेतृत्व करने वाले आइजनहावर ने घोषणा की थी कि देश के रक्षा उद्योग को पर्याप्त रूप से विनियमित करने में विफलता दुनिया भर में स्थायी युद्ध का कारण बन सकती है।

निवर्तमान राष्ट्रपति को यह एहसास हुआ कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, अमेरिका दुनिया की सबसे बड़ी सैन्य शक्ति के रूप में उभरा था, लेकिन इसकी विशाल औद्योगिक युद्ध मशीन जिसने इसकी जीत को आसान बना दिया था, वह सफेद सामान और बिजली के घरेलू उपकरण बनाने में पीछे नहीं हटने वाली थी। एक सहज रूप से सटीक भविष्यवाणी में, आइजनहावर ने कहा कि लाभ के लिए अपनी अतृप्त भूख के साथ रक्षा की विशाल औद्योगिक और सैन्य मशीनरी न केवल अंतहीन युद्ध का कारण बन सकती है, बल्कि अमेरिकी स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को भी 'खतरे' में डाल सकती है। उसके बाद की घटनाओं ने पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति को सही साबित कर दिया है, लेकिन, जैसा कि वे कहते हैं, यह पूरी तरह से एक अलग कहानी है।

विडंबना यह है कि अमेरिकी सैन्य-औद्योगिक परिसर पर आइजनहावर की चेतावनी भी रूस के प्रतिद्वंद्वियों के समान ही लागू होती है, और कुछ मामलों में लड़ाकू विमानों, परमाणु-संचालित बैलिस्टिक मिसाइल पनडुब्बियों (एसएसबीएन) और विभिन्न मिसाइल प्रणालियों जैसे लड़ाकू प्लेटफार्मों के उत्पादन में अमेरिका से भी बेहतर है। अन्य किटों के बीच। उदाहरण के लिए, अमेरिका के पास रूस की उन्नत अल्माज़-एंटी एस-400 'ट्रायम्फ' स्व-चालित सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल प्रणाली का मुकाबला करने के लिए बहुत कम था, जिसमें से भारत ने अक्टूबर 2018 में 5.5 डॉलर में पांच इकाइयां हासिल की थी और अब तक, ली है । सिर्फ एक की डिलीवरी ।

इसके अलावा, धातु विज्ञान, सेंसर और रडार प्रौद्योगिकी जैसे कुछ क्षेत्रों में रूस ने कथित तौर पर अमेरिका को पीछे छोड़ दिया, जिससे उनके बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ गई और तदनुसार 'संघर्ष' पैदा हो गया, जैसे कि आइजनहावर ने आर्थिक लाभ के लिए उपकरणों की बिक्री को बढ़ावा देने की भविष्यवाणी की थी। इसके अलावा, रूसी हथियारों की कीमत भी अमेरिका की तुलना में किफायती थी और हार्डी - अत्यधिक हिमालयी तापमान और रेगिस्तानी क्षेत्रों में काम करने में सक्षम - ऐसे कारक जो अल्जीरिया, चीन मिस्र, भारत, वियतनाम और कई लैटिन अमेरिकी राज्यों में इसकी बड़े पैमाने पर बिक्री के लिए जिम्मेदार थे। दूसरों के बीच में।

इस बीच, विस्तरी में विश्लेषकों ने आगे चेतावनी दी कि रूसी सैन्य प्रौद्योगिकी और चीनी धन का आसन्न मिलन, उनके बढ़ते द्विपक्षीय एवनीतिक, सैन्य, राजनीतिक और राजनयिक संरेखण के बाद, आइजनहावर की सतत संघर्ष की पूर्वचेतावनी को और अधिक सही ठहरा सकता है, क्योंकि बीजिंग अपनी ताकत बढ़ा रहा है। ताइवान और भारत के साथ उसका सीमा विवाद, अपनी प्राचीन झोंगगुओ या मध्य साम्राज्य की स्थिति को पुनः प्राप्त करने के लिए।

अंत में, दुनिया के हथियार निर्माता वित्तीय पुरस्कार पाने के लिए मनुष्य के सर्वोत्तम का शोषण करते रहेंगे; निःसंदेह, जब तक लाभ कमाने के लिए कुछ भी नहीं बचता।

भारतीय कवि साहिर लुधियानवी ने 1965 में पाकिस्तान के साथ भारत के दूसरे युद्ध के बाद लिखी एक कविता में इसे सबसे अच्छे ढंग से व्यक्त किया है।

जंग तो खुद एक मसला है,
जंग क्या मसलों का हल देगी,

आग और खून आज बख्शेगी,
एहतेयाज कल देगी। युद्ध स्वयं एक समस्या है, वह समस्याओं का क्या समाधान प्रस्तुत कर सकता है? इसका परिणाम आज आग और खून-खराबा होगा, और कल भूख और जरूरत पैदा होगी।

वन विभाग में खाकी के वनेलों की जालसाजियां

सूचना के अधिकार में अपील लगाने पर किया निशुल्क का वादा

जानकारी की अपेक्षा अपने भ्रष्टाचार छुपाने 4 पन्ने की औचित्यहीन दलीलें भेजीं

देश के राज्यों के वन विभागों उनकी आकूत प्राकृतिक व मानव निर्मित विशाल भूमियां, वन संपत्तियां वन भूमि पर लगे वृक्षों से लेकर खनिजों भूमि पत्थर तक पर सभी सत्ताधारी दल से लेकर अधिकारियों तक की लूटने की नियत बनी रहती है। इसके लिए हर कदम पर कई प्रकार के विभागीय वन लूटा खाओ सेवा या इंडियन फॉरेस्ट ईटिंग सर्विसेज से लेकर नीचे तक के कर्मचारियों द्वारा कई प्रकार के हर कदम पर षड्यंत्र किए जाते हैं। वैसे भी सभी षड्यंत्रकारियों की कार्य पद्धति लूट व छूट का ढंग अलग-अलग हो जाता है और इसी सबसे बचाने के लिए मनमोहन सरकार ने जो सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 लगाया था उसकी धारा 4 के 25 बिंदुओं के अंतर्गत अधिकांश जानकारी सभी विभागों को अपनी इंटरनेट साइट पर 12 अक्टूबर 05 को उपलब्ध करवा देनी चाहिए थी। जिसके लिए शासन में धनिया आवंटित किया था परंतु हरामखोर जालसाज अधिकारियों ने भ्रष्टाचारों के लिए किया जा रहे काले पीले और अपनी सच्चाइयों को छुपाने 19 वर्षों के बाद में भी अपनी सीटों पर कर्मचारी नहीं है साधन नहीं है का बहाना बना कर अपलोड नहीं किया। इसी कारण सूचना के अधिकार में संबंधित विभाग से इसकी अधिकृत मुद्रांकित कार्यालयीन जानकारी प्राप्त करने तथ्यों को समझाने और जनता के सामने समाचार पत्र के माध्यम से प्रस्तुत करने के लिए आवेदन देना पड़ता है। बेशक देश की व राज्यों की सरकारें उसके सभी मंत्रालय

वह उनसे जुड़े हुए विभाग अप्रत्यक्ष रूप से जानकारी उपलब्ध न करवाने के सभी प्रकार के छल कपट पूर्ण स्तरीय षड्यंत्र करते हैं। जिसमें किसी भी विभाग में प्रत्यक्ष आवेदन देने पर आवेदन शुल्क के रूप में रु.10 रसीद काटने की व्यवस्था होनी चाहिए। जो देश व प्रदेश के किसी भी शासकीय विभाग में नहीं है और ऑनलाइन करने पर स्वाभाविक सी बात है आपका सारा डाटा भुगतान मंच के मध्यस्थ के पास पहुंचता है। इंदौर के किसी भी डाकघर में 6-6 महीने तक रु.10 के पोस्टल ऑर्डर नहीं मिलते हैं। तो अधिक हैइससे आवेदन लगाने मेभारी परेशानी का सामना करना पड़ता है। आवेदन लगा देने के बाद में संबंधित भ्रष्टाधिकारी स्पष्ट ढंग से शुल्क की व्याख्या करने मांगने की अपेक्षा, हरामखोर जालसाजों का गिरोह नए-नए बहाने न्यायालय के प्रकरणों की जानकारी भेजता है जैसा की मध्य प्रदेश के वन विभाग के सामाजिक वानिकी शाखा के धूर्त उप वनमंडलाधिकारी गौतम जो वर्षों से इंदौर में ही हर वर्ष मोटा धन खर्च कर बैठा हुआ है। ने भी किया और जब अपील वन संरक्षक आदर्श श्रीवास्तव को प्रस्तुत की गई। उस समय अपील पर बहस करने की अपेक्षापूर्व के लोक सूचना अधिकारी गौतम व वर्तमान कोलोक सूचना अधिकारी ने सारी जानकारी निशुल्क देने का आश्वासन देकर अपील की सुनवाई खत्म करवा दी। और बदले में जानकारी देने की अपेक्षा चार पेज का आयोग व न्यायालय के निर्णय का पुलिंदा भेज दिया।

स्पष्ट है की सीसीएफ आदर्श श्रीवास्तव से लेकर नीचे तक सब घर भ्रष्ट जालसाज हैं जो जानकारी देने की अपेक्षा दलील देते हैं और आकर जानकारी मांगने की किसी भी आवेदक को जरूरत ही क्या पड़ती है जब कानून में धारा 4 के अंतर्गत 25 बिंदुओं की जानकारी स्वयं विभाग को अपनी साइट पर अपलोड करनी है। विभाग के अंतर्गत 10 से ज्यादा छोटे पौधों को विकसित करने की नर्सरीयां हैं। जिसमें गौतम के पासतीन देवास की नर्सरियां बरोठ, पारस और चंद्र केसर है जिसमें महीनों तक गौतम जाता ही नहीं है और झूठी डायरी पेट्रोल डीजल के बिल और लाग बुक भरी जाती रहती हैं। नर्सरीयों में वनवृक्षों की छोटी पौध विकसित करने के नाम पर भी मजदूरों की मजदूरी में फर्जीवाड़ा करने से लेकर बीजों काली प्लास्टिक की थैलियां खाद आदमी भ्रष्टाचार किया जाता है इसलिए जानकारी कैसे दी जा सकती हैंतो फिर दलीलें ही दी जाएंगी। जो यहां प्रस्तुत हैं।

चारों को मुख्यमंत्री बने रहना हैं तो हरवा दें मोदी को लोकसभा

पेज 1 का शेष

पिछले 10 सालो में निजीकरण के नाम पर अपने सभी सरकारी कर्मचारियों अधिकारियों को जो ठेके पर संविदा पर दैनिक वेतन भोगी पर रख जिस प्रकार से उनकाआर्थिक, सामाजिक और वित्तीय शोषण किया जा रहा है।

इसी श्रेणी की आपकी भी औकात होगी। ज्यादा नहीं अगले 5 साल के कार्यकाल मेंजितने बड़े-बड़े पद हैं सबका संविधान खत्म होते ही फुस्सी बम बना दिए जाएंगे। इसके साथ ही सारे जिलो के अभी जो मालिक हो ना सारे जिले पूंजीपतियों को पट्टे पर दे दिए जाएंगे। आप लोग सत्ता की शतरंज की बिसात के माहिर खिलाड़ी, कानून आपकी रखैल और देश के खुदा हो अभी तक।

यदि मोदी व उसके गिरोह को इस बार छल बल दल से सत्ता से बाहर नहीं खदेड़ा, तो जो हालत आपने करोड़ युवाओं कीसरकार में दैनिक मजदूरी पर नौकरी देकर की है। उससे ज्यादा हालत यह डकैतों के भूखे भेड़ियों का गिरोह, जुंए सट्टे शराब ड्रग खनन भू कॉलोनी औरत माफिया आपकी कर देगा।

अभी वक्त है संभल जाओ और इनके घमंड पाखंड की हवा निकाल सत्ता से बाहर भगाओ और जो उन्होंने आपको धमकाया हमको जीतने के लिए सत्ता से बाहर करते ही हरामखोरों डकैतों की गिरोह को गिरफ्तार करके जिलो में इतना कोड़े बरसा जाओ की तनकी वक्की भूल जाए।

नहीं तो सारे बड़े अधिकारियो देश के संविधान देश की मानव एवं प्राकृतिक संपदाओ के ताबूत की आखिरी कील होगी मोदी का सत्ता में आना। इसलिए 4 जून को किसी भी हाल में उनके पासस्टूट डेढ़ सौ से ज्यादा सिम नहीं आनी चाहिए इसकी गांठ बांध लो। सारे खेल के असली खिलाड़ी तो भारतीय प्रताड़ना सेवा अधिकारी ही होता है ना अपना अस्तित्व सुरक्षित रखना चाहते हो तो यह अंतिम मौका है।

क्या मोदी और शाह मणिपुर को पूरी तरह बर्बाद करके ही मानेंगे

पेज 1 का शेष

दुनिया का हर देश अपनी सेवा को मजबूत करने स्थाई सैनिकों की भर्ती प्रशिक्षण देने तकनीकी सिखाने युद्ध कौशल में मजबूती के साथ प्रशिक्षित करता है हमारे देश में उल्टे ही एक तरफसी को एलक चौथाई करने के साथ स्थाई सैनिकों की भर्ती प्रशिक्षण की अपेक्षा 4 साल के अग्नि वीर की भर्ती का षड्यंत्र कर दिया गया। म्यांमार पीओके और पाक से आए हुए आतंकियो द्वारा भारत में आकर लगातार नशीली दावो का व्यापार कर आर्थिक लाभ कम अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत करने के साथ अपनी बस्तियां बसा कर व्यापक स्तर पर स्थानीय रह वासियो को उजाड़ने मार काट हिंसा बलात्कार का षड्यंत्र भी हर क्षेत्र में किया जा रहा है। जिसका पुलिस अधिकारियो के पास से लेकर

सरकार के पास तक पूरा डाटा है पर दिल्ली प्रशासन गृह मंत्रालय से लेकर स्थानीय प्रशासन पुलिस और सत्ताये भी चुप है। आखिर क्या या अगले 5 साल में सत्ता आने पर कश्मीर से लेक रम्यांमार तक जो चाहेल खाए पूरा हिस्सा चीन अपने देश में शामिल कर ले यह चुप ही रहेंगे।

इस संबंध में भास्कर में छपा यह लेख।

आखिर आइएएस कब तक, क्यों 10वर्षो से झेल रहे मोदा-शाह का दबाव

चारों को मुख्यमंत्री बने रहना हैं तो हरवा दें मोदी को लोकसभा

ईवीएम का फर्जीवाड़ा करके जितवा रहे हो इस बार हरवा स्वंय के साथ देश बचाओ

राजस्थान मध्य प्रदेश उत्तर प्रदेश और छत्तीसगढ़ में चारों मुख्यमंत्री जो भाजपा के मोदी के कठपुतली बनाए गए हैं। यदि उन को सत्ता मे बन रहना है तो हर हाल मे मुख्यमंत्री रहते हुए अपने प्रदेश के जिलो के जालसाज डकैत कलेक्टरो को निर्देश दे दे। की हर हाल मे बीजेपी की 90% सीटे हरवा दे। अन्यथा यदि वह पुनः प्रधान मंत्री बना तो सबका राजस्थान मे सवर्णो ब्राह्मणो के वोट के लिए, भजनलाल शर्मा को बना दिया। मध्य प्रदेश मे मोहन यादव को यूपी में अखिलेश यादव, बिहार मे लालू यादव एवं उसके पुत्रो की काट करने व यादवो के वोट लेने, भेड़ियों को यादवो का हमदर्द दिखाने, अपराधिक प्रवृत्ति के भू कॉलोनी ईंट भट्टा शराब माफिया मोहन यादव को मुख्यमंत्री बना दिया। छत्तीसगढ़ मे आदिवासी मुख्यमंत्री बनाकर आदिवासियो के वोट लेने उनकी जमीन हड़पने और आदिवासियो के नरसंहार पर चुप रहने के लिए आदिवासी मुख्यमंत्री बना दिया। उपयोग हो जाने के बाद चारो मुख्यमंत्री को गद्दी से उतार कर दूध से मक्खी की तरह बाहर कर देगा। इसीलिए बेचारे कैलाश और रमेश ने शंकर लालवानी का जितवाने बम का अपहरण कर शंकर को जितवाने मैदान मे दमदार खिलाड़ी ही नही छोड़ा ताकि आने वाले भविष्य मे मुख्यमंत्री बन सके। पर यह दांव उल्टा ही गले की घंटी बन गया। पर कैलाश मुख्यमंत्री नही होगा। यह तो पक्का है।

अच्छा रंगा बिल्ला के बाहर जाने के बाद आरएसएस मे इतनी दम रह नही जाएगी। कि वह इनको अपने मन से हटा सके।

अब सीधा सा गणित है, कि यदि चारो राज्यो मे वर्तमान को मुख्यमंत्री बन रहना है तो कलेक्टरो को निर्देश देकर कांग्रेस को जितवा दिया जाए।

क्योंकि कांग्रेस की केंद्रीय सरकार बन जाने के बाद इन चारो को राहुल गांधी हटा नही पाएगा। और भेड़ियो के हार जाने के बाद रंगा बिल्ला में इतनी औकात रह नही पाएगी कि इन चारो को हटाकर अपने मनमर्जी के मुख्यमंत्री बना ले। दूसरी तरफ चुनाव आयोग से लेकर जिलो की अंतिम इकाई तक बैठे हुए घोर धूर्त महा जालसाज भ्रष्ट कलेक्टर भारतीय प्रताड़ना सेवा के अधिकारियो बेशक इन मूर्ख जाहिलो की सरकार मे भ्रष्टाचार जालसाजी से 10 साल मे जनता को लूटने बर्बाद करने बहुराष्ट्रीय कंपनियो से कमीशन खाने के लिए सफाई कैशलेस नोटबंदी जीएसटी कोरोना की तालाबंदी मे करोड़ो लोगो को बेरोजगार कर मौतो का तांडव करवा कर बहुत कमाई के मौके दिए दोनो हाथ से हर प्रकार से जनता की आंखो मे आंसू बहाकरसभी जिलो के कलेक्टरो से लेकर संभाग आयुक्त सभी मंत्रालयो के संचालक आयुक्त प्रमुख अभियंता पीएस, सीएस की और मंत्रियो मुख्यमंत्रियो ने जनता के आंखो के आंसू और चिताओ पर, देश की मानव निर्मित एवं प्राकृतिक संपदाओ के निजीकरण मे खूब नोट बटोरे। हजारो करोड़ का धन भ्रष्टाचार से लूट कर देश विदेश मे निवेशित किया। नोट बटोर कर बेटे बेटियो रिश्तेदारो को विदेशो मे घुमाया पढ़ाया जमाया यहां वहां हजारो को की संपत्तियां खरीदी। सरकारी बैंको रिजर्व बैंक अन्य वित्तीय संस्थाओ व सरकारी संस्थाओ का धन लूटकर शेयर मार्केट मेअपने शेयरो की कीमत ऊपर रखने के लिए झोकते चले गए। बेशक आपका यह सचजनता की कल्पना से परे है पर मेरी निगाह आप जानते है। आपके कुकर्मों पर वृहत स्तर पर 25 साल से है।

आपने पिछले 10 सालो मे देख लिया किस प्रकार से देश के विभिन्न महत्वपूर्ण मंत्रालयो मे प्रधान सचिव संयुक्त सचिवो के पद परआपको हटाकर डेढ़ सौ से ज्यादा निजी कंपनियो के अधिकारियो को नियुक्त करके आपका पत्ता साफ कर दिया गया है। आप अच्छी तरीके से जानते हैं यदि पुनः भेड़िया हुंड पार्टी मोदी और अमित शाह आएगा जैसे ही संविधान बदला जाएगा वैसे ही आपका भी पत्ता काट दिया जाएगा।

(शेष पेज 6 पर)

चुनावी महोत्सव में 200 करोड रु से ज्यादा में 100 करोड़ के फर्जी भुगतान

लोक निर्माण सं.1,2, नगर निगम ग्रामीण विकास ने किये हजम

मतदान केंद्रों पर कैमरे नहीं, मतदान कर्मियों को भोजन पानी नहीं मिला तो 98% मतदाताओं को छांछ, केरी का पना, पानी की व्यवस्था कैसे हो सकती थी?

चुनावी महोत्सव यथार्थ मे जिला कलेक्टर के साथ नगर निगमो पालिकाओ ग्रामीण विकास लोक निर्माण विभाग के भवन एवं पथ के साथ विद्युत एवं यांत्रिकी आदि के लिए 10-30% खर्च कर बाकी सब फर्जी बिलो से हजम कर लिया जाता है। शहर के कुछ मतदान केंद्रो परनिगम की जिम्मेदारी होती है जहां चुनाव कार्य मे ईमानदारी से करने और फर्जी वोटिंग रोकने उपद्रवियो पर निगरानी के लिए कैमरे, विद्युत व्यवस्था पंखो मतदाताओ के लिए पर्याप्त छाया के लिए टेंट मतदाताओ के साथ मतदान कर्मियो के लिए भी स्वच्छ जल शौचालय आदि की व्यवस्था भी सुनिश्चित की जाती है। जैसा कि इंदौर के समाचार पत्रो मे घोषणा की गई थी की मतदान कर्मियो व मतदाताओ के लिए भी जांच और केरी के पानी की व्यवस्था की जाएगी जो 99% किसी भी मतदान केंद्र परनही देखी गई ना ही कैमरे देखे गए। फिर भी सबके फर्जी बिल लगाकर भुगतान दिया जाएगा दूसरी तरफ नवंबर मे विधानसभा चुनाव हुए थे इसलिए सभी मतदान केंद्रो पर विकलांगो के लिए रैंप की व्यवस्था वह पहुंच मार्गो का निर्माण किया गया था परंतु लोकसभा चुनाव की तैयारी के लिए पुनः तीनो विभागो मेअपने-अपने कार्य क्षेत्र के सभी मतदान केंद्रो पर उस व्यवस्था के फर्जी वाउचर लगाकर भुगतान ले लिए।

चुनाव खर्चो मे कलेक्टर को आवंटित धन जो वह विभिन्न विभागो मे व्यवस्थाओ को बनाने के लिए आवंटित करता है। स्वाभाविक है आवंटन के समय ही 20 से 25% धन लौटाने की गारंटी लेता है। जो लगभग उसके पास पहुंची जाता है। एक जिले मे मतदाताओ व मतदान केंद्रो के हिसाब से मान लीजिए रु.50 प्रति मतदाता के हिसाब से व्यवस्था बनाने के लिए आवंटित किया गया।

स्वाभाविक है नगर निगम पालिकाएं लोक निर्माण विभाग ग्रामीण विकास विभाग को अपने-अपने क्षेत्र मे टेंट तंबू बेरीकेडिंग के लिये ठेकेदार को नियुक्त करकार्य करवा धन भुगतान करना था। आपको मैंने वीडियो भेजेहमारे क्षेत्र मे 13 मई को मतदान होना था पर टेंट और तंबू 6 मई को ही लगा दिए गए थे। जो जो 15 मई की रात तक नही हटाए गए थे। इंदौर मे बेरी कटिंग के नाम परलोक निर्माण विभाग के दो रंगा प्रभारी एसडीओ सबिला बिल्ला उप यंत्री राजेंद्र शर्मा जो पूरे मुख्य अभियंता कार्यालय का हर काम का ठेका होता है और मोटी कमाई करता है पूर्व मे भी लोकायुक्त का छापा पड़ चुका है।

बेरी कटिंग के नाम से पिछले कई सालो से हर बार नई बनाने और पुरानी बेरीकटिंग का रंग रोगन कर उपयोग करने मे करते आ रहे है और उसके नाम से विप विजिट दिखाकर मनचाहे बिल लगाकर मनचाही वसूली मे कार्यपालन अधीक्षण यंत्री वह मुख्य अभियंता तक को हिस्सा पहुंच कर वर्षो से मैदान मे बैठे हुए हैं। यही इंदौर-उज्जैन संभाग के 18 संभागो के है। और यही हाल पूरे प्रदेश मे सभी लोक निर्माण विभाग के संभागो की है।

चुनावी महोत्सव के नाम पर लगभग प्रदेश मे अनुमान के अनुसार 10000 करोड़ रुपए आवंटित हुए। जिसमे मात्रा काम 2000 करोड़ से ज्यादा का नही हुआ। 8000 करोड़ रुपए सीधे सरकारी विभागो द्वारा फर्जी बिल वाउचरो से हजम कर लिए गए। यही कारण है की कोई भीभ्रष्ट जालसा विभाग सूचना के अधिकार मे जानकारी नही देता और ना ही सभी बिलोम के भुगतान से लेकर निविदा तक की जानकारी सूचना अधिकार अधिनियम की धारा 4 के 25 बिंदुओ के अंतर्गत अपलोड नही करता।

साप्ताहिक
समय माया
samaymaya.com
करोड़ों किसानों मजदूरों छोटे व्यवसायियों उद्योगों, सरकारी कर्मचारियों अधिकारियों ठेका संविदा कर्मियों के हितों की रक्षा व देशी विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के षड्यंत्रों के विरुद्ध पिछले 25 वर्षों से संघर्षरत
साप्ताहिक समयमाया समाचार पत्र व samaymaya.com की वेबसाइट पर समाचार, शिकायतें और विज्ञापन (प्रिंट एवं वीडियो) के लिए संपर्क करें
मप्र के समस्त जिलों में एजेंसी देना है एवं संवाददाता नियुक्त करना है
मो. 9425125569 / 9479535569
ईमेल: samaymaya@gmail.com
samaymaya@rediff.com

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक- अजमेरा एस.पी. कुमार द्वारा अपनी दुनिया प्रिंटर्स, 13 प्रेस कॉम्पलेक्स, ए.बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 299, अम्बेडकर नगर, इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित।
संपादकः अजमेरा एस.पी. कुमार, मो. 9425125569, भोपाल प्रतिनिधि- एस.के. भारद्वाज मो. 9425637958